Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 49 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरूवार 01 अगस्त 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अपरिग्रह वृत्ति ही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

Abstinece from infatuation is our greatest wealth of the soul.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने नए राज्यपाल को दी बधाई

रमेन डेका ने छत्तीसगढ़ के राज्यपाल पद की ली शपथ

रायपुर (विश्व परिवार) श्री रमेन डेका ने आज राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित गरिमामय समारोह में छत्तीसगढ़ के 10 वें राज्यपाल के रूप में अपने पद की शपथ ली। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा ने उन्हें शपथ दिलाई। राज्यपाल श्री डेका ने ईश्वर के नाम पर शपथ ली। इस अवसर पर प्रथम महिला श्रीमती रानी डेका काकोटी उपस्थित रहीं। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, उच्च न्यायालय बिलासपुर के मुख्य न्यायाधिपति न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा ने राज्यपाल श्री डेका को पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका अभिवादन किया और शुभकामनाएं दी।

समारोह में मुख्य सचिव अमिताभ जैन ने रमेन डेका को छत्तीसगढ़ का राज्यपाल नियुक्त करने के लिए राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा जारी वारंट ऑफ अपॉइंटमेंट पड़ा। शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ और समापन सेरेमोनियल पुलिस बैंड द्वारा बजाए गए राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर राज्य गीत की धुन भी बजाई गई। शपथ ग्रहण के उपरांत राज्यपाल श्री रमेन डेका को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री अरूण सावए वित्तमंत्री श्री ओपी चौधरी वन एवं जलवायु परिवर्तन केदार कश्यप, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन, खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री दयाल दास बघेल लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल राजस्व खेलकूद एवं युवा कल्याण मंत्री टंकराम वर्मा महिला बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित अन्य विधायकगण उपस्थित थे।

समारोह में छत्तीसगढ़ राज्य सूचना आयोग के आयुक्त एनके शुक्ला, आलोक चंद्रवशी, छत्तीसगढ़ महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती किरणमयी नायक छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष धरमलाल कौशिक, , नारायण चंदेल, गौरीशंकर अग्रवाल, पूर्व मंत्री, सांसद, विधायकगण सहित जनप्रतिनिधिए पुलिस महानिदेशक अशोक जुनेजा, अपर मुख्य सचिव श्रीमती रेणु पिल्ले, सुब्रत साहू, मनोज पिंगुआ, राज्यपाल के सचिव, यशवंत कुमार, छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल व्हीपी वर्मा राज्यपाल के विधिक सलाहकार भीष्प प्रताप पाण्डेय सहित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी, राज्यपाल के परिजन, विश्वविद्यालयों के कुलपति, मीडिया कर्मी एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

राज्यपाल रमेन डेका का जीवन परिचय इस प्रकार है :- छत्तीसगढ़ के 10 वें राज्यपाल रमेन डेका का जन्म 1 मार्च 1954 को असम के सुआलकुची, कामरूप असम में हुआ। उनके पिता का नाम स्वर्गीय श्री सुरेंद्र नाथ डेका और माता का नाम स्वर्गीय श्रीमती चंपाबती डेका है। उनके परिवार में धर्म पत्नी श्रीमती रानी डेका काकोटी एवं दो बच्चे हैं। उन्होंने बीए की डिग्री दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र विषय में प्राग्ज्योतिष कॉलेजए गुवाहाटी विश्वविद्यालय असम से प्राप्त की। रमेन डेका एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ हैं। वे सन् 1977 से राजनीति में सक्रिय हैं। वे वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। रमेन डेका वर्ष 2006 में असम भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भी रहे हैं। श्री डेका 2021 अगस्त माह से असम राज्य के नवाचार एवं रूपान्तरण आयोग के ;कैबिनेट मंत्री का दर्जाद्ध के उपाध्यक्ष पद पर 29 जुलाई 2024 तक रहे है।

वे दो बार सांसद रहे। पहली बार वर्ष 2009 में 15 वी लोकसभा के लिए असम के मंगलदोई सीट से सांसद चुने गये थे। इस दौरान वे गृह मामलों की स्थायी समिति के सदस्यए लोक लेखा के सदस्यए भारत भूटान संसदीय मैत्री समूह सदस्य अधीनस्थ विधान समिति सदस्यए सदन की बैठकों से सदस्यों की अनुपस्थिति पर समिति सदस्य रहे। उसके बाद वर्ष 2014 में वे 16 वीं लोकसभा के लिए दुबारा सांसद निर्वाचित हुए। दूसरे कार्यकाल में वे डेका लोकसभा में अध्यक्षों के पैनल के सदस्य भी रहे।

इस दौरान सदस्य अनुमान समितिए सदस्य सलाहकार समितिए सदस्य विदेश मंत्रालय और प्रवासी भारतीय मामले प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजनाष्ए के तहत केंद्रीय सलाहकार समिति सदस्य भारत-चीन संसदीय मैत्री समूह सदस्यए चाय बोर्ड के सदस्य का दायित्व निर्वहन किया। दूसरे कार्यकाल में ही सदस्य गृह मामलों की स्थायी समितिए सदस्य सामान्य प्रयोजन समितिए सदस्य उप समिति द्वितीय अनुमान समितिए सदस्य विदेश मामलों की स्थायी समिति रहे और 2021 से अभी तक नवाचार रूपान्तरण आयोग असम के उपाध्यक्ष रहे । श्री डेका ने 31 जुलाई 2024 को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल पद की शपथ ली।

तिब्बत सीमा को चीन बार्डर न कहे सरकार : सासंद दोरजी

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। सिक्किम के सांसद दोरजी शेरिंग लेप्चा ने राज्यसभा में केंद्र सरकार से चीन सीमा शब्द पर पुनर्विचार करने और इसके बजाय तिब्बत सीमा का उपयोग करने का आग्रह किया। उनका कहना है कि लेहए लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश से सिक्किम तक 1400 किलोमीटर तक फैला क्षेत्र वास्तव में तिब्बत की सीमा से लगता है, न कि चीन से।

बीजेपी सांसद लेप्चा ने मंगलवार कहा कि यह चीन सीमा नहीं है। यह तिब्बत सीमा है। उन्होंने भारत सरकार और सेनाए ठत्व् जैसी एजेंसियों से इसे आधिकारिक तौर पर मान्यता देने का आग्रह किया। दोरजी शेरिंग लेप्चा ने सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास में असमानता का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि चीन ने अपनी तरफ गांव और बुनियादी ढांचा बनाया है, जबकि भारत की तरफ ज्यादातर आरक्षित वन और अभयारण्य हैं जहां आवाजाही प्रतिबंधित है।

बीजेपी सांसद दोरजी शेरिंग लेप्चा ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों के पासए चीन ने गांव बसाए हैं। उन्होंने केंद्र सरकार से इस मामले की समीक्षा करने और विकास की योजनाओं में असमानताओं को दूर करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि कि चीन काफी समय से हमारे क्षेत्रों पर कड़ी नजर रख रहा है। सांसद ने कहा कि एलएसी तिब्बत से सटी है चीन से नहीं।

डॉ विलासराव दपूमरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का पदभार ग्रहण किया

बिलासपुर। डॉ सुस्कर विपुल विलासराव ने दपूमरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का पदभार आज को समीर कान्त माथुर से ग्रहण किया । समीर कान्त माथुर वर्तमान में दपूमरे के उप महाप्रबंधक सा के पद पर पदस्थ हैं एवं वे उप महाप्रबंधक सा के साथ साथ मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार भी देख रहे थे । डॉ सुस्कर विपुल विलासराव भारतीय रेलवे परिचालन सेवा आईआरटीएस के 2014 बैच के अधिकारी है । डॉ सुस्कर विपुल विलासराव मुख्य जनसंपर्क अधिकारी के पद पर पदस्थापना के पूर्व दपूमरे मुख्यालय बिलासपुर में उप मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक यात्रीसेवा के पद पर पदस्थ थे । साथ ही ये मध्य रेलवे के सोलापुर भूसावल व नागपुर रेल मंडल में परिचालन एवं वाणिज्य विभाग के अलग.अलग पदों सहित दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर रेल मंडल में मंडल वाणिज्य प्रबन्धक तथा उप मुख्य परिचालन प्रबन्धक गतिशक्ति के पद पर भी कार्य कर चुके हैं ।

माओवादी उन्मूलन के रास्ते पर बढ़ चुका है छत्तीसगढ़ : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ अब माओवाद उन्मूलन के रास्ते पर आगे बढ़ चुका है। हम राज्य में माओवाद प्रभावित क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए संकल्पित होकर कार्य कर रहे हैं। माओवाद के रास्ते को छोड़कर वापस लौटने वालों के लिए हम बेहतर पुनर्वास नीति तैयार करेंगे और इसके लिए हमारे गृह मंत्री असम प्रवास पर भी हैं। यह बात मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने न्यूज 18 के डायमंड स्टेट कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पिछले 6 माह में 150 नक्सलियों को मार गिराया गया है। सुरक्षाबलों के हौसले बुलंद है। गोली का जवाब गोली और बोली का जवाब बोली से ही दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोगों का सपना साकार करने के लिए ही छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ। नवनिर्माण के साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य निरंतर विकास के रास्ते आगे बढ़ रहा है। श्री साय ने कहा कि प्रदेश में मोदी की गारंटी को पूरा करने का काम किया जा रहा है। मोदी जी की गारंटी को पूरा करते हुए हमने किसानों को धान के दो वर्षों का बकाया बोनसए 3100 सौ रुपए प्रति क्विंटल में धान की खरीदीए माता.बहनों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उन्हें प्रति माह 1 हजार रूपये की राशि देने का काम हम कर रहे हैं।

श्री साय ने आगे कहा कि पिछली सरकार के कार्यकाल में हुए भ्रष्टाचार और घोटालों की जांच कराई जा रही है और दोषी व्यक्तियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि आज छत्तीसगढ़ के घर.घर में नल से जल की व्यवस्था करने का कामए अमृत मिशन के माध्यम से जल पहुंचाने का कामए बिजलीए पानी सड़क जैसी मूलभूत सुविधाएंए धुएं से मुक्ति के लिए उज्ज्वला योजना से लोगों जीवन को आसान बनाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण इलाकों में शौचालय मान.सम्मान से जुड़ा विषय था। बरसात के दिनों में जो कठिनाइयां माता बहनों को होती थीए उसे देखते हुए प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की। आज इस मिशन से देश में बड़ा परिवर्तन लाया है।

उन्होंने रामलला दर्शन योजना और शक्तिपीठ सर्किट के निर्माण के संबंध में भी जानकारी साझा की। मुख्यमंत्री ने इस दौरान अपने व्यक्तिगत जीवन संघर्ष और राजनीतिक जीवन से जुड़ी जानकारियां भी दी।

सीएम कैंप कार्यालय बगिया से महादेव को मिला श्रवण यंत्र

खुश होकर बुजुर्ग ने कहा अब वह हर रविवार सुनेगा मन की बातश, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का जताया आभार

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। कांसाबेल तहसील के शबदमुंडा गांव के रहने वाले 75 वर्षीय महादेव यादव को सीएम कैंप कार्यालय से श्रवण यंत्र दिया गया। जिससे अब वह बहुत खुश है। उसने खुश होकर कहा कि अब वह भी हर रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात सुन सकेगा।जशपुर जिले के बगिया में स्थापित सीएम कैंप कार्यालय का लाभ निरंतर हर वर्ग के लोगों को प्राप्त हो रहा है। गंभीर से गंभीर बीमारियों का इलाज करा कर थक चुके परिजन अब आस लेकर मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय बगिया पहुंच कर मदद की गुहार लगा रहे हैंए और कार्यालय द्वारा उनका त्वरित निराकरण भी किया जा रहा है। इसी कड़ी में कांसाबेल ब्लॉक के शबदमुंडा गांव के रहने वाले 75 वर्षीय बुजुर्ग महादेव यादव के कानों में समस्या थीए वह ठीक से सुन नहीं पाता था। बुधवार को वह अपनी समस्या लेकर सीएम कैंप कार्यालयए बगिया पहुंचा था। जहां उसने आवेदन देकर श्रवण यंत्र दिलवाने की गुहार लगाई। सीएम कैंप कार्यालय ने पूरी संवेदनशीलता दिखाई और वहां की पहल पर तत्काल ही महादेव यादव को श्रवण यंत्र प्रदान कर दिया गया। महादेव अब बहुत खुश है कि अब उसे भी आसानी से सुनाई देगा और वह बिना परेशानी के लोगों से बात कर सकता है। इसके लिए उसने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार जताया है। प्रात: 10 बजे से 3 बजे तक जनदर्शन कार्यक्रम में सुनी जाती है लोगों की समस्या प्रदेश में साय सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निजी निवास बगिया को सीएम कैंप कार्यालय घोषित किया गया हैएजिसके बाद यहां लोग आसानी से अपनी समस्या सुनाने पहुंचते हैएऔर उनकी न केवल समस्या सुनी जाती हैएबल्कि गंभीरता पूर्वक मौके पर ही त्वरित निराकरण भी किया जाता है जिससे लोगों का यह सीएम कैंप कार्यालय आशा का केंद्र बना हुआ है।

कृषि मंत्री ने नवा रायपुर के शासकीय आवास एम-5 में किया गृह प्रवेश

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा आदिम जाति विकास मंत्री राम विचार नेताम आज शुभ मुहूर्त में विधि.विधान से पूजा.अर्चना कर अटल नगर नवा रायपुर स्थित नवीन शासकीय आवास एम.5 में गृह प्रवेश किया। मंत्री रामविचार नेताम को इस मांगलिक अवसर पर नवा रायपुर पहुंचकर बधाई देने वालों में महामहिम राज्यपाल रामेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव सायएअरुण साव तथा मंत्रीगण, सांसद, विधायकगण, पूर्व मंत्रीगण शामिल रहे। राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने शासकीय आवास में एक पे ? मां के नाम कार्यक्रम के तहत वृक्षारोपण किया। गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्रियों के लिए दो.दो एक में अटल नगर नवा रायपुर के सेक्टर 24 में शासकीय आवास निर्मित है। मंत्रियों के इस भव्य शासकीय आवास में कार्यालय आगंतुकों के लिए बैठने की व्यवस्थाएपार्किंग आदि की व्यवस्था सहित सर्वसुविधा युक्त भव्य आवास निर्मित है। आज मंत्री नेताम के निवास के गृह प्रवेश के शुभ अवसर पर मंत्रिमंडल के सदस्यगणों विधायकगण, विभिन्न सामाजिक संगठन अधिकारीगण सहित बड़ी संख्या में प्रदेशवासियों ने मंत्री नेताम और उनकी धर्मपत्नी पुष्पा नेताम को बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। सरल सहज स्वभाव के मंत्री नेताम से मिलकर बधाई देने पहुंचे लोगों में गजब का उत्साह रहा। क्षेत्र के लोग भी बड़ी संख्या में पहुंचे। लोगों ने इस अवसर पर मंत्री नेताम को भगवान रामलला का छायाचित्र खुमरी, हल भेंट की।

विश्व फेफड़े के कैंसर दिवस 2024 इतिहास और महत्व

रायपुर (विश्व परिवार)। दुनियाभर में हर साल 1 अगस्त को वर्ल्ड लंग्स कैंसर डे के रूप में मनाया जाता है। यह खास दिन लोगों के बीच इस जानलेवा बीमारी के बारें में जागरूकता फैलाने के लिए मनाया जाता है। फेफड़ों का कैंसर दुनिया में सबसे आम कैंसरों में से एक है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार साल 2020 में फेफड़ों के कैंसर से लगभग 1.8 मिलियन लोगों की मौत हुई थी।

ष्वर्ल्ड लंग्स कैंसर डे का इतिहास पहली बार लंग्स कैंसर को लेकर साल 2012 में फोरम ऑफ इंटरनेशनल रेस्पिरेटरी सोसाइटीज ने इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ लंग्स कैंसर और अमेरिकन कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियन की सहायता से यह कार्यक्रम आयोजित किया था। दुनिया भर में कैंसर के कारणोंए लक्षणोंए रोकथाम और निदान के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल ष्वर्ल्ड लंग्स कैंसर डेष् मनाया जाता है। यह खास दिन लोगों से इस जानलेवा रोग के शीघ्र निदान और उपचार के लिए अपनी जांच समय से करवाने का भी आग्रह करता है।

ष्वर्ल्ड लंग्स कैंसर डे की थीम.

ष्वर्ल्ड लंग्स कैंसर डे 2024 की थीम है की हम एक साथ मजबूत हो कर फेफड़ों के कैंसर के प्रति जागरूकता के लिए एकजुट हों।

लंग्स कैंसर के कारण.

फेफड़ों में कैंसर होने के सबसे बड़े कारणों में धूम्रपान, नशीले पदार्थों का सेवन, प्रदूषण वाली हवा, तापमान का उतार.चढाव सांस संबंधित बीमारी जेनेटिक कारण हो सकते हैं। एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल में उपस्थित कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ देवव्रत हिशीकर इस क्षेत्र में अनुभवी है। उन्होंने रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में एमडी और मेडिकल ऑन्कोलॉजी में डीआरएनबी की डिग्री हासिल की है। डॉ देवव्रत हिशीकर ने कई अस्पतालों में कई जटिल चिकित्सा मामलों को संभालने में योगदान दिया है। उन्हें सटीक निदान पर ध्यान देने और रोगियों का सहानुभूतिपूर्वक इलाज करने के लिए जाना जाता है।

डॉ देवव्रत हिशीकर ने बताया कि खांसी या निमोनिया जैसी परेशानियां ट्रीटमेंट के बाद भी वापस आती रहती हैंए लेकिन कभी.कभी यह फेफड़ों के कैंसर का प्रारंभिक संकेत भी हो सकता है। फेफड़ों के कैंसर के सबसे आम लक्षणों में लगातार या बिगड़ती खांसीए सांस लेने में तकलीफ सीने में दर्द, आवाज बैठना या बिना कारण वजन कम होना भी शामिल है। हालांकि, इसके बारे में सटीक जानकारी केवल जांच के जरिए ही मिल सकती है। इसके लिए आपको शरीर में होने वाले कुछ और बदलावों पर भी गौर करना होगा। उन्होंने ये भी बताया की एमएमआई नारायणा हेल्थ कैंसर इंस्टिट्यूट में कैंसर के इलाज के सभी प्रकार की सर्जरी, कीमोथेरेपी और हाई एंड रेडिएशन मशीन की सेवाएं उपलब्ध हैए यहां कैंसर के मरीजों के लिए सभी प्रकार के विशेष उपायों की सुविधा भी मिलती है जिससे इलाज के दौरान मरीज को परेशानी न हो। किसी और विषय को दिखाना हो तो उन्हें और कहीं जाने की जरूरत नहीं है। पिछले 13 वर्षों से एमएमआई नारायणा हेल्थ हॉस्पिटल मरीजो श्रेष्ठ इलाज की सुविधा दे रहा है।

जैसा की हम जानते हैं धूम्रपान,नशीले पदार्थों का सेवन करना, फेफड़ों के कैंसर का मुख्य कारणों में से हैएतो आइएए हम सब मिलकर इस बीमारी के खिलाफ लड़ाई लड़ें और एक स्वस्थ भारत का निर्माण करें।

संक्षिप्त समाचार

बच्चों ने किया मुंशी प्रेमचंद को स्मरण

आरंग। शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर स्मरण किया।इस अवसर पर बच्चों ने मुंशी प्रेमचंद की जीवनी पढ़कर उनके व्यक्तित्व व उनके साहित्य में योगदान के बारे में जाना। वहीं वरिष्ठ शिक्षक महेन्द्र कुमार पटेल ने बच्चों को संबोधित करते हुए मुंशी प्रेमचंद के संघर्षमय जीवन व उनके साहित्य में योगदान के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा मुंशी प्रेमचंद का जीवन बहुत ही संघर्षमय होते हुए साहित्य में उनका योगदान अतुलनीय हैं। उन्होंने लगभग 300 कहानियां, कई उपन्यास व नाटक लिखे।जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

इस अवसर पर संस्था प्रमुख के के परमाल वरिष्ठ शिक्षक अशोक कुमार चंद्राकर, सूर्यकांत चंद्राकर, डिलेश्वर साहू, शिक्षिका श्रीमती संगीता पाटले सहित बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों ने मुंशी प्रेमचंद की जयंती में भाग लिया।

रिलीफ ट्रेन के यात्रियों को पहुंचाई गई हर संभव सहायता

रायपुर (दैनिक विश्व परिवार)। रेलवे प्रशासन द्वारा 30 जुलाई को चक्रधरपुर मंडल में हुये दुर्घटनाग्रस्त ट्रेन 12810 हावड़ा-सीएसएमटी के यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाने हेतु 02810 स्पेशल रिलीफ ट्रेन चलाई गई 7 यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते दुर्घटनाग्रस्त ट्रेन के यात्रियों को बेहतर चिकित्सा, ट्रेन में साफ सफाई की उचित व्यवस्था उपलब्ध कराने हेतु रायपुर मंडल रेल प्रशासन द्वारा भी विशेष इंतजाम किए गए ।

मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी के नेतृत्व में रिलीफ ट्रेन के यात्रियों की सहायता हेतु विशेष प्रबंधन किया गया 7 रिलीफ ट्रेन के यात्रियों को हर संभव मदद पहुंचाने हेतु विभिन्न विभागों के साथ ही दूसरे मंडलों से भी समन्वय स्थापित किया गया । साफ सफाई से लेकर जरूरी चिकित्सा सुविधा आदि की व्यवस्था की गई । रायपुर स्टेशन के पर रिलीफ ट्रेन के यात्रियों की सहायता एवं आवश्यकता हेतु वाणिज्य विभाग के सहायक वाणिज्य प्रबंधक अरविंद कुमार साव, अपने कर्मचारी दल के साथ उपलब्ध रहे डॉक्टरों की टीम द्वारा सभी कोचों में जाकर जरूरतमंद सभी यात्रियों को मरहम-पट्टियाँ लगाई गई साथ ही दर्द निवारक दवाइयाँ भी प्रदान की गई । प्लेटफार्म में भी चोटिल एवं घायल यात्रियों का उपचार किया गया 7 इस दौरान आवश्यक दवाइयां भी प्रदान की गई । यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रेलवे सुरक्षा बलों की अतिरिक्त टुकड़ियाँ तैनात की गई थी 7 बेहतर स्वच्छता हेतु ट्रेन के सभी कोचों की तुरंत साफ-सफाई भी करवाई गई । रेलवे प्रशासन द्वारा किए गए इस सेवा कार्य की यात्रियों तथा उनके परिजनों द्वारा सराहना की गई ।

राजधानी में कल उद्योग श्री सम्मान समारोह का आयोजन

रायपुर। राजधानी रायपुर के मैग्नेटो मॉल समीप स्थित वुड केस्टल में 1 अगस्त को शाम 4 बजे शगुन फाउंडेशन एवं छत्तीसगढ़ महिला मंच के संयुक्त तत्वाधान में ष्उद्योग श्री सम्मान समारोह एवं प्रदर्शनी उद्घाटन का कार्यक्रम आयोजित किया गया है, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन मौजूद रहेंगे। वही कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेत्री सरोज पांडे द्वारा किया जायेगा। कार्यक्रम के संयोजक शताब्दी सुबोध पांडे तृप्ति गोविंद राठी व इंदिरा जैन है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉण्अश्विनी बोरसटे, विशेष अतिथि के रूप में पूर्व सांसद प्रदीप गांधी अग्रवाल सभा के अध्यक्ष विजय अग्रवालए भाजपा प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष अजय काले, बाल संरक्षक आयोग के पूर्व सदस्य उमा भारती सराफ महिला आयोग की पूर्व सदस्य उषा टावरी शामिल होंगे। वही 1 से 4 अगस्त तक आयोजित होने वाली इस प्रदर्शनी में दर्शकों के लिए फ्री एंट्री है।

पॉवर कंपनी से मुख्य अभियंता (ईएचटी) श्री सोनेकर की विदाई

रायपुर (दैनिक विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी के मुख्य अभियंता (ईएचटी) अविनाश सोनेकर की 37 वर्ष की सेवा अवधि उपरान्त आज कंपनी मुख्यालय में भावभीनी विदाई दी गई। मुख्यालय विद्युत सेवाभवन में मानव संसाधन (सीएसपीटीसीएल) द्वारा आयोजित विदाई कार्यक्रम में एमडी ट्रांसमिशन राजेश शुक्ला, एमडी डिस्ट्रीब्यूशन भीमसिंह कंवर ने उन्हें कंपनी द्वारा प्रदत्त प्रमाण पत्र, शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर सेवानिवृत्त श्री अविनाश सोनेकर ने सेवाकाल मे अधिकारियों से मिले सहयोग व टीमवर्क को अपनी सफलता का मूलमंत्र बताया। श्री सोनेकर ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन दोनों क्षेत्रों के विशेषज्ञ रहे हैं। वर्ष 2010 में पॉवर कंपनी द्वारा बिजली चोरी के प्रकरणों में कमी लाने के लिए उन्हें तात्कालिन अध्यक्ष श्री पी.जॉय.ओम्मेन द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री सोनेकर ने अपने कार्यकाल में सर्वाधिक राजस्व वसूली, उपभोक्ता सेवा, विद्युत अधोसंरचना एवं विकास कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

साथ ही प्रदेश स्तर में ट्रांसमिशन कंपनी के मानव संसाधन विभाग में पदस्थ कार्यपालन अभियंता विनोद गोवर्धन, अनुभाग अधिकारी बिलासपुर भूषणलाल वर्मा, अनुभाग अधिकारी रायपुर श्री आरिफ अली, मानचित्रकार (सिविल) श्री भूपेंद्र कुमार टांग एवं लाईन सहायक श्रेणी एक रघुवीर ध्रुव को भी भावभीनी विदाई दी गई।

इस अवसर पर ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के कार्यपालक निदेशक, मुख्य अभियंतागण एवं कार्यालयीन स्टाफ मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में मंच संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक (जनसंपर्क) उमेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया ।

बस्तर से महतारी वंदन योजना की राशि का करेंगे हस्तांतरण

जगदलपुर(दैनिक विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय 01 अगस्त को बस्तर जिले के प्रवास में रहेंगे। इस प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री कृषि कॉलेज के ऑडिटोरियम में महिला सम्मेलन में महतारी वंदन योजनांतर्गत प्रदेश की हितग्राही महिलाओं के खाते में प्रत्येक माह एक हजार रुपए के मान से दी जाने वाली राशि का हस्तांतरण करेंगे। कार्यक्रम में महतारी वंदन योजना के हितग्राहियों की सुविधा हेतु महतारी मोबाईल एप्प का शुभारंभ भी करेंगे। इसके अलावा कार्यक्रम में राष्टीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत जिले के 2752 स्व- सहायता समूहों को वित्तीय समावेशन के तहत 100 करोड़ का बैंक लोन का भी वितरण करेंगे। कार्यक्रम में उद्योग विभाग,श्रम विभाग सहित अन्य विभाग के हितग्राहियों को भी सामग्री वितरण किया जाएगा। इसके उपरांत मुख्यमंत्री एक पेड़ माँ के नाम महावृक्षारोपण अभियान के तहत पौधरोपण भी करेंगे। कार्यक्रम में शामिल होने वाले महिलाओं को वन विभाग के द्वारा पौधों का भी वितरण किया जाएगा।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री श्री साय जिले को 8 करोड़ 35 लाख से अधिक राशि के विकास कार्यों का सौगात देंगे। दन्तेश्वरी कन्या कॉलेज के सामने नवीन राजस्व कार्यालय परिसर में 48.03-48.03 लाख की लागत से निर्मित तीन अनुविभागीय दण्डाधिकारी कार्यालय जगदलपुर, तोकापाल और लोहण्डीगुड़ा तथा 66.49 लाख की लागत से नवीन तहसील कार्यालय जगदलपुर का जीर्णोद्धार के साथ 250-250 लाख की लागत से निर्मित लोहण्डीगुड़ा और बुरगुम थाना का लोकार्पण करेंगे। इसके अलावा जिला अस्पताल (महारानी अस्पताल) परिसर में डीएमएफटी मद के तहत 01 करोड़ 72 लाख 76 हजार की लागत से स्थापित माडुलर किचन एवं सामग्री युक्त अन्नपूर्णा रसोईघर का लोकार्पण करेंगे। साथ ही महारानी अस्पताल परिसर में प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केन्द्र का शुभारंभ करेंगे।

रायपुर मंडल के 24 सदस्य को सेवानिवृत्त हुए

रायपुर (दैनिक विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल के विभिन्न विभागों में कार्यरत रेल परिवार के 24 सदस्य (19 सामान्य एवं 05 असामान्य) जुलाई 2024 में अपनी गौरवशाली रेल सेवा पूर्ण करने के पश्चात् सेवानिवृत हुए।

इस समारोह में मंडल कार्मिक अधिकारी (श्रीमती निकिता अग्रवाल), सहायक मंडल वित्त प्रबंधक (श्री विजय कुमार शर्मा), सहायक मंडल वित्त प्रबंधक (श्रीमती सुमित्रा पाल), सेवानिवृत्त कर्मी एवं उनके परिजन, कल्यांण निरीक्षक तथा बंदोबस्त अनुभाग के कर्मचारी उपस्थित थे। मंडल के सेवानिवृत्त होने वाले 24 रेलकर्मियों में यांत्रिकी विभाग से 03, विद्युत विभाग से 09, इंजीनियरिंग विभाग से 05, कार्मिक (शिक्षा) विभाग से 01, चिकित्सा विभाग 01, लेखा विभाग 01, सुरक्षा विभाग 02 एवं वाणिज्य विभाग से 02 कर्मचारी शामिल है। सामुदायिक भवन में आयोजित समारोह में समस्त सेवानिवृत्त कर्मियों को विदाई दी गई। इस अवसर पर सहायक मंडल वित्त प्रबंधक द्वारा सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति का समस्त भुगतान प्रमाण-पत्र दिया गया। (ई-पेमेंट के माध्यम से सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कुल राशि रुपये 8,47,57,300/- का भुगतान किया गया)7 पेंशन भुगतान आदेश, सेवानिवृत्त कर्मचारी का पहचान पत्र एवं कर्मचारियों एवं आश्रितों का पास कार्ड, सेवा मेडल आदि दिनांक 31/07/2024 को प्रदान किया गया।

मंडल कार्मिक अधिकारी एवं सहायक मंडल वित्त प्रबंधक ने संभी को संबोधित करते हुए सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवा के दौरान अपने दायित्यो का निर्वहन अच्छे से करने पर बधाई दी तथा स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए सेवानिवृत्त जीवन को अपने परिवार एवं रिश्तेदारों के साथ आनंदपूर्वक व्यतीत करने की बात कही, साथ ही सेवानिवृत्ति के दौरान मिली राशि को सही जगह निवेश करने की सलाह दी। अंत में उन्होंने सभी को सेवानिवृति के पश्चात् सुखद भविष्य एवं अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामनायें दी।

50 हज़ार युवा बताएँगे रायपुर विकसित एवं आधुनिक शहर कैसे बने

मोदी सरकार के 10 वर्ष पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल का अभिनव आयोजन

केंद्रीय शैक्षणिक संस्थाओं समेत रायपुर लोकसभा के 100 कॉलेजों में हो रहा है नया भारत उत्सव का आयोजन

बृजमोहन अग्रवाल युवाओं से करेंगे सीधा संवाद

रायपुर (दैनिक विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के 10 वर्ष पूर्ण होने पर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल के नेतृत्व में रायपुर लोकसभा क्षेत्र के 100 से अधिक कॉलेजों में नया भारत उत्सव मनाया जा रहा है . रायपुर लोकसभा देश का पहला लोकसभा क्षेत्र हैं जहां प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के 10 वर्ष पूर्ण होने पर इतने बड़े स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

नया भारत उत्सव कार्यक्रम के संयोजक दानसिंह देवांगन ने बताया कि 9 जून 2024 को प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के 10 वर्ष पूर्ण हुए।

इस अवसर पर रायपुर लोकसभा क्षेत्र के केंद्रीय शैक्षणिक संस्थाओं एनआईटी, आईआईएम, ट्रिपल आईटी सहित राज्य सरकार के 100 कॉलेजो में एक प्रतियोगिता के माध्यम से युवाओं से सवाल किया गया है कि रायपुर लोकसभा विकास के क्षेत्र में देश में कीर्तिमान स्थापित करे, इस हेतु रायपुर के सांसद बृजमोहन अग्रवाल जी को आप क्या सुझाव देना चाहते हैं। कॉलेज विद्यार्थियों को पाँच सुझाव लिखकर अपने कॉलेज में जमा करना है ।

इसके अलावा युवाओं से यह भी पूछा गया है कि मोदी सरकार की प्रमुख 8 योजनाओं - स्वच्छ भारत मिशन, कोरोना वैक्सीन (एक संजीवनी), पीएम किसान सम्मान निधि,आयुष्मान भारत योजना, उज्वला योजना, नई शिक्षा नीति,अग्निवीर योजना और बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ योजना में से कौन सी योजना विद्यार्थी को सर्वाधिक प्रिय है और क्यों

इसका उत्तर भी युवाओं को पाँच वाक्यों में देना हैं ।

प्रत्येक कॉलेज से सबसे अच्छे सुझाव देने वाले तीन युवाओं को सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल सम्मानित एवं पुरस्कृत करेंगे।

युवा संवाद

नया भारत उत्सव के अंतर्गत सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल मोदी सरकार के 10 वर्ष के कार्यकाल पर युवाओं से सीधे संवाद करेंगे। जिसमें युवा अपने सांसद से देश के विकास,उपलब्धि, विदेश नीति और आर्थिक नीति,रोजगार समेत विभिन्न विषयों पर सवाल पूछ सकते हैं। उनके सवालों का जवाब रायपुर के सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल देंगे।

डॉ. संजय अलंग को भावभीनी विदाई

रायपुर। रायपुर संभागायुक्त डॉ. संजय अलंग को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा दी गई। 35 वर्षों तक अपनी सेवाएं देने के बाद आज डॉ अलंग सेवानिवृत्त हुए है। इस मौके पर अपने अनुभव साझा करते हुए डॉ. अलंग ने कहा कि प्रशासनिक दायित्वों के 35 वर्ष का अनुभव बहुत ही यादगार रहा है। इस दौरान सभी का स्नेह मिला, वह हमेशा यादगार रहेगा। उन्होंने कहा कि मेरी प्रशासनिक यात्रा बेहद सुखद रही है और जो स्नेह मिला, उसकी स्मृतियां हमेशा मन में रहेगी। उन्होंने कहा कि उस दौर में पढ़ाई कठिन परिस्थितियों में होती थी ।

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिर्टन Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

स्टील उत्पादकों ने ऊर्जा प्रभार में बढ़ी छूट से बकाया अपना मार्जिन

रायपुर (दैनिक विश्व परिवार)। सरकारें जब किसी उद्योग को जब कोई रियायत, छूट या सब्सिडी देती हैं तो उनका प्रमुख उद्देश्य यह होता है कि उत्पादन बढ़े और इसका अंतिम लाभ आम जनता को वह वस्तु सस्ती दरों पर उपलब्ध हो सके लेकिन छत्तीसगढ़ में विगत 4 वर्षों में उल्टी गंगा ही बहाई गई। विगत 5 वर्षों के आंकड़ों को देखा जाए तो इस मामले में बढ़ी विरोधाभासी तस्वीर नजर आती है। स्टील उत्पादकों ने उत्पादन तो बढ़ाया लेकिन दाम कम होने की बजाय बढ़ते चले गये। वर्ष 2018-19 में जहां 100 मिलियन टन उत्पादन पूरे देश में हुआ था और दर 33,833 रू. प्रति टन थी जो वर्ष 2022-23 में बढ़कर 53,036 रू. प्रति टन हो गई।

यह दिलचस्प कहानी छत्तीसगढ़ के संदर्भ में विशेष तौर पर मौजूं है क्योकि इसमें स्टील उद्योगपतियों के खाते में लाभ का मार्जिन ब ?ाने में मुख्य भूमिका तत्कालीन राज्य सरकार ने निभाई है। छत्तीसगढ़ राज्य इस बात के लिए प्रसिद्ध है कि देश के कुल स्टील उत्पादन का 30 प्रतिशत छत्तीसगढ़ में ही होता है। छत्तीसगढ़ में देश की सर्वाधिक गुणवत्ता वाली लौह अयस्क खदानें है। आम जनता को यह अपेक्षा रहती है कि हमारी खदानों, हवा, पानी और सरकारी मदद का लाभ जनता को सस्ते लोहे के रूप में मिले। लेकिन पूर्व राज्य सरकार का गड़बड़झाला सामने आते ही लोग हैरान-परेशान हो रहे हैं। देश में स्टील उत्पादन के आंकड़ों में छत्तीसगढ़ के 30 प्रतिशत का आकलन किया जा सकता है। भारत में वर्ष 2017-18 में 100 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 33,833 रू. प्रति टन थी। वर्ष 2019-20 में 104 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 34,198 रू. प्रति टन थी। वर्ष 2020-21 में 112 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 45,072 रू. प्रति टन थी। वर्ष 2021-22 में 118 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 51,089 रू. प्रति टन थी। वर्ष 2022-23 में 125 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 53,036 रू. प्रति टन थी। वर्ष 2023-24 में 142 मिलियन टन उत्पादन हुआ जबकि औसत वार्षिक दर 50,109 रू. प्रति टन थी।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2021-22 में छत्तीसगढ़ में अचानक और आश्चर्यजनक अंग से जो टैरिफ आदेश जारी किया गया था उसमें लोड फैक्टर छूट को अधिकतम 8 प्रतिशत से बढ़ा कर 25 प्रतिशत कर दिया गया था जबकि पॉवर कंपनी द्वारा इस प्रकार का कोई भी प्रस्ताव नियामक आयोग को नहीं भेजा गया था। इसके कारण स्टील उत्पादकों को प्रति वर्ष लगभग 750 करोड़ रू. का अतिरिक्त लाभ मिला था लेकिन प्रदेश में स्टील की दरों में कमी के बदले ड़ेढ गुना तक वृद्धि की गई थी।

न्यायालय तहसीलदार अभनपुर, जिला रायपुर (छ.ग.)

// ईश्तहार //

ग्राम उरला
रा.प्र.क्र. 202407110500073 ब/121 वर्ष 2022-23

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक **भगवानदास बसंल पिता नंदराम अग्रवाल** निवासी महामाया रोड अंबिकापुर जि सरगुजा छ.ग. द्वारा ग्राम उरला प.ह.न. 23 तह अभनपुर जि. रायपुर स्थित भूमि ख.न. 190. 192 का भाग रकबा 1500 वर्गफुट भूमि को अनावेदक मेसर्स जी के कस्ट्र. कंपनी द्वारा **सुरेश अटलानी पिता गोलाराम** द्वारा पंजीकृत बैनामा द्वारा दिनांक 07.03.2014 को कय किया गया है। जिसका नामांतरण 240 अ/6 वर्ष 2016.17 को दर्ज कर दिनांक 30.05.2018 को आदेश पारित किया गया। लेकिन आवेदक के नाम पर अभिलेख दुरूस्त नही किया गया है। आवेदक द्वारा आनलाईन अभिलेख दुरूस्त किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था/समूह को कोई दावा आपत्ति हो तो वे अपना दावा आपत्ति आवेदन इस न्यायालय में नियत पेशी तारीख 20/08/2024 तक न्यायालयीन समय में स्वतः अथवा अपने वैध अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर पेश कर सकते है, नियत तारीख के बाद प्राप्त आपत्ति आवेदन पर विचार नहीं किया जायेगा ।
मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से आज दिनांक 29/07/2024 को जारी किया गया।

मुहर

तहसीलदार
अभनपुर

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, रायपुर
(छ0ग0 शासन का एक उपक्रम) (कार्यालय न.सं.उ., छ.रा.वि.मं. की उत्तरदायी कंपनी)
सी.आई.एन. U40108CT2003SGC015822, पता- क्वा. नं. 5 एवं 6, पावर हाउस कालोनी, सी.एस.ई.बी. कैम्पस, गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.)
वेबसाईट- www.cspc.gov.in, ईमेल-eecitynorth.raipur@cseb.gov.in टेलीफोन नं.- 0771-2574753

सूचना

विद्युत लाईनों/उपकरणों के रख-रखाव लाईन मरम्मत के आव"यक कार्य हेतु निम्नांकित फीडरों/उपकेन्द्र के सम्मुख द"ार्ये गये तिथि एवं समय में विद्युत आपूर्ति अवरूद्ध रहेगी जिसके समय में आव"यकतानुसार परिवर्तन संभव हैं। **असुविधा के लिये खेद हैं।**

क्र.	दिनांक एवं दिन	समय	उपकेन्द्र का नाम	फीडर का नाम	प्रभावित क्षेत्र
1	01.08.2024, गुरूवार	सुबह 11:00 बजे से दोपहर 02:00 बजे तक	33/11 के.व्ही. गोंदवारा उपकेन्द्र	11 के.व्ही. हीरा फीडर	सीता नगर, रामनगर, बसंत विहार, सूर्या नगर, गोंदवारा, गोगांव के आसपास का क्षेत्र एवं संबंधित अन्य क्षेत्र

स्वहित एवं राश्ट्रहित में ऊर्जा बचाइये।
उपभोक्तागण विद्युत शिकायत के लिये विद्युत शिकायत केन्द्र गुढ़ियारी-2593892, खमतराई-2576317, टाटीबंध-2574755, कबीर नगर-2574024, केन्द्रीय काल सेन्टर-1912 में संपर्क कर एवं मोर बिजली एप डाउन लोडकर बिजली संबंधित ि"ाकायत दर्ज करा सकते हैं।
जनहित में विद्युत आपूर्ति हेतु लगाये गये विद्युत लाईन के नीचे/बगल से भवन/रोड/तालाब का निर्माण करना अवैधानिक हैं। अतः विद्युत सुरक्षा नियमों का पालन करे।

S - 41011/2

कार्यपालन अभियंता
नगर संभाग उत्तर
छ.स्टे.पॉ.डि.कं.लिमि.,रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 01 अगस्त 2024

बाढ़ में राहत और बचाव के लिए तैयारी रखें पूरी-कलेक्टर

शुरू होने जा रहा प्रयास आवासीय विद्यालय, कलेक्टर श्री गोयल ने की तैयारियों की समीक्षा

रायगढ़,(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री गोयल ने जिले में बारिश के चलते बाढ़ की स्थिति न बने इसके लिए अधिकारियों को विशेष रूप से निगरानी रखने के निर्देश समय-सीमा की बैठक में दिए। उन्होंने जल संसाधन विभाग से बांधों के जल भराव और जल निकासी के संबंध में जानकारी ली। कार्यपालन अभियंता ने बताया कि हीराकुद बांध के 20 गेट खोले गए हैं। जिससे यहां जलस्तर नियंत्रित है। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि ओडिसा में अधिकारियों से सतत समन्वय रखें। इसके साथ ही गंगरेल बांध के खोले जाने से यहां के जलस्तर में बढ़ोत्तरी की भी मॉनिटरिंग करें। उन्होंने एसडीएम रायगढ़ को पुसौर इलाके में खास तौर पर डूबान और प्रभावित क्षेत्रों के निगरानी के लिए कहा और आपातकालीन स्थिति से निपटने पूरी तैयारी रखने के निर्देश दिए। नगरीय निकायों में प्रधानमंत्री आवास निर्माण में धीमी प्रगति को लेकर कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल ने गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने लैलूंगा और पुसौर के सीएमओ को कार्य में लापरवाही को लेकर नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि अधिकारियों को उनके क्षेत्र में बनने वाले आवासों के निर्माण में प्रगति को लेकर नियमित समीक्षा के लिए निर्देशित किया। कलेक्टर श्री गोयल ने बिना सूचना लंबे समय से अनुपस्थित कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही के संबंध में दिए पिछली बैठक में विभागों द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि नियमानुसार सभी अनुपस्थित लोगों पर कार्यवाही की जाए। कलेक्टर श्री गोयल ने असंगठित श्रमिकों के आयुष्मान, राशन और मनरेगा कार्ड निर्माण के बारे में जानकारी ली। उन्होंने लक्ष्य के अनुसार श्रमिकों के काड्र्स निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए। सभी अधिकारियों को निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने जल शक्ति अभियान के तहत जल संरचनाओं के जियो टैगिंग का काम पूरा करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों के बीमा के संबंध में कृषि अधिकारी से जानकारी ली। उन्होंने कहा कि 31 जुलाई अंतिम तिथि है। इसलिए 2 दिनों में किसानों का अधिक अधिक से फसल बीमा के लिए प्रस्ताव भेजें। कलेक्टर श्री गोयल ने खाद्य विभाग के काम-काज की समीक्षा करते हुए मिलिंग उपरांत मिलर्स से चावल जमा किए जाने के संबंध में खाद्य अधिकारी से जानकारी ली। उन्होंने खाद्य विभाग के अमले को मिलर्स द्वारा चावल जमा करवाने में तेजी लाने के निर्देश दिए। साथ ही इसकी नियमित रूप से समीक्षा किए जाने के निर्देश दिए। इसी के साथ उन्होंने पीडीएस बारदाने जमा किए जाने के बारे में जानकारी ली। कलेक्टर श्री गोयल ने सभी एसडीएम से कहा कि उनके क्षेत्र अंतर्गत जल्द पीडीएस बारदाने जमा किए जाने के लक्ष्य की समीक्षा कर काम में तेजी बनाए रखें। कलेक्टर श्री गोयल ने प्रयास आवासीय विद्यालय प्रारंभ किए जाने की तैयारियों के संबंध में जानकारी ली। बताया गया कि लाइवलीहुड कॉलेज में संचालन शुरू किया जाएगा। वहां इसके लिए जरूरी तैयारी की जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

नशीली दवाईयों लेने वाले 8 गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी द्वारा सजग कोरबा अभियान के तहत जिले में नशा के अवैध सेवन व कारोबार पर लगातार अंकुश लगाने की कार्यवाही की जा रही है। जिसके तहत कटघोरा थाना के द्वारा दिनांक 24 जुलाई को 4320 नशीली दवा कुल कीमत 46 हज़ार के साथ चकचकवा पहाड़ बायपास कटघोरा से आरोपी गोपाल यादव उर्फ मलिंगा को गिरफ़्तार किया था। जिससे पूछताछ में बताया गया कि उसके द्वारा किस किस को नशीली दवा बेची गई है। जिसके बताए अनुसार कटघोरा पुलिस द्वारा सूचना तस्दीक करने पर 8 अन्य अवैध नशे में लिप्त आरोपियों को अलग-अलग जगहों से गिरफ्तार कर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही किया गया है। जिसमें सुनील कुमार यादव, निवासी कुसमुंडा, संगीत कुमार पटेल, निवासी चाकाबुड़ा, भीम जनवार, निवासी छुरी, रमेश यादव, निवासी बांकीमोंगरा, विक्रांत बंजारे, निवासी कटघोरा, मनमोहन दास महंत, निवासी घुंचापुर कटघोरा, उमेश श्रीवास, निवासी, पुरानी बस्ती कटघोरा, सुनील सोनी, दीपका। इस सभी आरोपियों को न्यायायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

वाहन में लगी भीषण आग, चालक ने कूद कर बचाई जान

कोरबा(विश्व परिवार)। सार्वजनिक क्षेत्र के वृहद उपक्रम कोल् इंडिया के अधीन संचालित एसईसीएल बिलासपुर की कोरबा-पश्चिम क्षेत्र में स्थापित खुले मुहाने की गेवरा कोयला परियोजना अंतर्गत एसईसीएल की मेगा परियोजना गेवरा खदान में मिट्टी डिस्पेच में लगी वाहन में भीषण आग लग गई। वाहन चालक ने जैसे-तैसे कूद कर अपनी जान बचाई। जानकारी के अनुसार एसईसीएल की गेवरा खदान अंदर ग्राम भटोरा से लगे में सैनिक माइनिंग (जीटीपी) की वोल्वो ट्रक में देर रात भीषण आग लग गई। जिसके बाद ट्रक चालक गाड़ी रोककर कूद गया। फ्लिहाल आग लगने की वजह शार्ट सर्किट बताई जा रही है। घटना की जानकारी के बावजूद विभागीय दमकल विभाग की कोई भी वाहन मौके पर नही पहुंची, जिससे वाहन पूरी तरह से जल गई।

कलेक्टरने सिम्स अस्पताल का किया निरीक्षण

बिलासपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर अवनीश शरण ने आज सिम्स अस्पताल का निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल में मरीजों की सुविधा के लिए चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यो का बारीकी से अवलोकन किया। मरीजों से मुलाकात कर अस्पताल में मिल रहे इलाज एवं खानपान का हाल जाना। अस्पताल अधीक्षक डॉ. एसके नायक सहित निर्माण एजेन्सियों के अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर ने निरीक्षण के दौरान नव निर्मित एपिडेमिक वार्ड का अवलोकन किया। मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि के गंभीर मरीजों के उपचार के लिए यह नया वार्ड विकसित किया गया है। फिलहाल 10 बेड इसमें हैं। उन्होंने लिफ्ट स्थापना के लिए जरूरी सिविल वर्क को जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए ताकि दो और लिफ्ट जल्द से जल्द शुरू किया जा सके। विभिन्न वार्डों में 11 और टॉयलट बनाने के निर्देश भी पीडब्ल्यूडी को दिए। उन्होंने परिसर में एक जगह जल जमाव को देखने हुए ड्रेनेज को सुधारने के निर्देश दिए। शिवरीनारायण से इलाज के लिए आयी मरीज से चर्चा कर अस्पताल की व्यवस्था की जानकारी ली। कलेक्टर ने पंजीयन कक्ष के उपर निर्मित कमरों का उपयोग भी चिकित्सा कार्यों के लिए शुरू करने के निर्देश दिए ताकि भीड़ थोड़ी व्यवस्थित हो सके। उन्होंने आग से बचाव के लिए फिट किये जा रहे फायर फाइटिंग सिस्टम कार्य का भी अवलोकन किया और एक महीने के भीतर पूर्ण करने के निर्देश दिए।

खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग ने किया होटलों का निरीक्षण

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देशानुसार जिले में खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा होटलों एवं ढाबों का निरीक्षण कर अमानक खाद्य पदार्थो पर कार्यवाही की जा रही है। इसी कड़ी में खाद्य सुरक्षा अधिकारी उमेश वर्मा के नेतृत्व में रविवार को भाटापारा के 10 होटल एवं खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण चलित खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला के माध्यम से किया गया जिसमें से 7 होटलों में अनहाईजनिक किचन एवं खाद्य पदार्थों को ढकने के पर्याप्त उपाय नहीं किए जाने पर होटल संचालकों को नोटिस जारी किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि निपानिया रोड स्थित मानिकपुरी होटल,यादव होटल, छोटू साहू होटल,बस स्टैंड स्थित शिफा बिरयानी, लक्ष्मी नारायण निषाद बिरयानी, चाचा बिरयानी, धीवर होटल,आनंद ढाबा को नोटिस जारी किया गया। इसके साथ ही बब्बू स्वीट्स से विधिक नमूना भी लिया गया।जाँच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भेजा गया।

जन चौपाल व जनसमस्या निवारण शिविर में प्राप्त आवेदनों का करें शीघ्र निराकरण : कलेक्टर

कोरिया(विश्व परिवार)। कलेक्टर लंगेह ने आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित समय-सीमा की बैठक में विभिन्न विषयों की समीक्षा की। कलेक्टर लंगेह ने विभागवार लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए समय-सीमा पर प्रकरणों का निराकरण करने तथा उच्च न्यायालय में लंबित प्रकरणों में समय पर जवाबदावा प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। कलेक्टर लंगेह ने आंगनवाड़ी केंद्रो में नियमित रूप से बच्चों को गरम व पोषण आहार मिले यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने महिला एवं बाल विकास अधिकारी को बैकुंठपुर व सोनहत विकासखंड के तहत आने वाले सभी आंगनवाड़ी केंद्रों का निरीक्षण करने, वहां बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में पानी, पंखे, शौचालय, बिजली व साफ-सफाई रखने के निर्देश दिए। उन्होंने आंगनवाड़ी केन्द्रों में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने, बच्चों व गर्भवती माताओं को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने को कहा। लंगेह ने यह भी स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी हालत में जर्जर भवन में आंगनवाड़ी केंद्र संचालित न करें, ऐसे करने पर संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर लंगेह ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से कहा कि सिकलसेल की जांच में तेजी लाएं और सिकलसेल से पीड़ित मरीजों का उपचार भी समय पर करने के निर्देश दिए। लंगेह ने सोनहत एवं बैकुण्ठपुर के बीएमओ को निर्देष दिए हैं कि मौसमी बीमारियों के रोकथाम के लिए सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में आवष्यक सुविधा मुहैया कराने के निर्देष दिए। डायरिया, डेंगू-मलेरिया सहित सर्पदंश के मामले में त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर विनय कुमार ने शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में योगदान देने की दिलाई शपथ

कोरिया(विश्व परिवार)। कलेक्टर व अध्यक्ष कार्यकारिणी जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण विनय कुमार लंगेह के मार्गदर्शन में उल्लास साक्षरता केन्द्रों के सफल संचालन हेतु बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक के पश्चात आयोजित की गई। कलेक्टर ने बैठक में उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम की सफल क्रियान्वयन हेतु सत्र 2024-25 के लक्ष्य संबंधित चर्चा कर सर्वे व उल्लास एप में एंट्री की समीक्षा की। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं उपाध्यक्ष जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी के द्वारा अधिकारियों को नियमित रूप उल्लास साक्षरता केन्द्रों का मॉनिटरिंग करने के लिए निर्देशित किया गया। जिला परियोजना अधिकारी जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण कोरिया के द्वारा जानकारी दी गई नई शिक्षा नीति 2020 के एक घटक के रूप में उल्लास कार्यक्रम को आरम्भ किया गया है। जिसमें सर्वप्रथम असाक्षरों का चिन्हांकन कर आफलाइन सर्वे उसके पश्चात उल्लास एप में ऑनलाइन एंट्री का कार्य किया जा चुका है। स्वयंसेवी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें असाक्षरों को पठन-पाठन कराए जाने हेतु सामग्री उपलब्ध कराया जाएगा। नव भारत साक्षरता के तहत बुनियादी साक्षरता, जीवन कौशल, व्यवसाय कौशल, बुनियादी शिक्षा व सतत शिक्षा शामिल है। ग्राम पंचायत के साथ-साथ शहरों में भी इसका संचालन किया जाएगा।

यूरोप की सबसे ऊँची चोटी पर बिलासपुर की बेटी निशा यादव ने लहराया तिरंगा

कलेक्टर से की मुलाकात, सहयोग के लिए दिया धन्यवाद

बिलासपुर(विश्व परिवार)। यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊँची चोटी पर बिलासपुर की बेटी निशा यादव ने तिरंगा लहराया। वापस आकर आज कलेक्टर अवनीश शरण से उनके कार्यालय में सौजन्य मुलाकात की। कलेक्टर ने यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊँची चोटी माउन्ट एलब्रुस 5 हजार 642 मीटर फतह करने पर उन्हें बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनका हौसला बढ़ाया। निशा ने कलेक्टर के प्रति आभार जताते हुए कहा कि आप के सहयोग से ही यह संभव हो पाया। निशा यादव ने बताया कि 13 जुलाई को वे रात में अपने इस मिशन के लिए आगे बढ़ी और सुबह 9 बजे माउन्ट एलब्रुस पर फतह पाई। लगातार 2 साल की कड़ी मेहनत के बाद यह सफलता हासिल हुई है। उन्होंने बताया कि कलेक्टर अवनीश शरण की संवेदनशील पहल के चलते ही उनका यह सपना पूरा हो पाया। उन्होंने कलेक्टर से मिलकर मदद की गुहार लगाई थी। कलेक्टर ने उनकी बात गंभीरता से सुनी और उन्हें सीएसआर मद से आर्थिक मदद दिलवाई और अपनी शुभकामनाओं के साथ उनका हौसला बढ़ाया। वे कहती है कि इस मदद के चलते ही इस पर्वत विजय का संकल्प पूरा हो सका। यह मेरे लिए गौरवशाली उपलब्धि है, इसके लिए मै कलेक्टर महोदय की सदैव आभारी रहूंगी। निशा यादव ऑटो रिक्शा चालक श्याम कार्तिक यादव की सुपुत्री हैं। इसके पहले उन्होंने उत्तराखंड में नैनीताल की सबसे ऊँची चोटी नैनापिक 8 हजार 522 फीट, उत्तराखंड में केदारकंठ 12 हजार 500 फीट, अरूणाचल प्रदेश में गोरीचेन ग्लेशियर 22 हजार 500 फीट, छत्तीसगढ़ के सबसे ऊँचे पर्वत गौरालाटा 900 मीटर पर भी फतह हासिल की है।

मलेरिया व डायरिया नियंत्रण पर करें पूरा ध्यान केंद्रित : कलेक्टर दीपक सोनी

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी ने सोमवार को जिला अस्पताल के सभाकक्ष में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने जिले में मलेरिया व डायरिया पर पूरी तरह से नियंत्रण के लिए निगरानी दुरुस्त रखने और प्रभावी उपाय पर पूरा फोकस करने के निर्देश दिए। उन्होंने डायरिया के प्रकरणों पर कमज़ोर सूचना तंत्र पर नाराजगी जाहिर की । मितानिन कार्यक्रम के प्रभारी को उन्होंने इसे दुरुस्त करने को कहा और केस की प्रतिदिन रिपोर्टिंग के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि मलेरिया व डायरिया पीड़ितों की जानकारी के लिए हर गांव में मितानिनो के द्वारा डोर टू डोर सर्वे कराएं तथा प्रतिदिन वास्तविक रिपोर्ट लें। मितानिनो से प्राप्त रिपोर्ट को विकासखंड वार समेकित कर जिला कार्यालय को भी प्रेषित करें। जिला समन्वयक सभी मितानिनो को सक्रिय करें और नियमित रुप से बैठक लेकर दवाई की उपलब्धता, किसी प्रकार की समस्या आदि की जानकारी लें। इसके साथ ही विकासखंड स्तर पर भी बीएमओ, बीपीएम की उपस्थिति में बैठक आयोजित करें। उन्होने मलेरिया व डायरिया से बचाव के लिए जरुरी एहतियात बरतने के लिए जागरूकता अभियान अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही पानी को उबालकर पीने, मछरदानी का उपयोग व ताजा भोजन का सेवन करने, मलेरिया या डायरिया की शिकायत की तत्काल सूचना देने की कोटवारों से मुनादी कराने तथा बीएमओ से अपील कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि मलेरिया या डायरिया से जनहानि न हो इसके लिए सभी सम्बंधित अपनी जिम्मेदारी से बढ़कर प्रयास करें।केस निकलने पर घर- घर सर्वे, पानी की जाँच, क्लोरीनेशन ,सर्विलेंस में वृध्दि जैसे कार्यवाही सुनिश्चित करें।हर गांव की मितानिन अलर्ट रहें और परिवार के सदस्यों की जानकारी लेते रहें।

भव्य व गरिमामय से मनाया जाएगा 78वीं स्वतंत्रता दिवस समारोह

कोरिया(विश्व परिवार)। आज कलेक्टर विनय कुमार लंगेह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में 78वीं स्वतंत्रता दिवस के आयोजन पर होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों पर पुलिस अधीक्षक सूरज सिंह परिहार, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी की उपस्थिति में बैठक आयोजित की गई। विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शासकीय आदर्श रामानुज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बैकुंठपुर के मिनी स्टेडियम में जिलास्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह संबंधित विभागों के अधिकारियों को भव्य व गरिमामय आयोजन के लिए तैयारियां प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभिन्न जिला अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपते हुए कहा कि राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर मुख्य कार्यक्रम स्थल पर आवश्यक कार्य 13 अगस्त तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक सूरज सिंह परिहार ने अधिकारियों से कहा कि कार्यक्रम स्थल में आवश्यक कार्य समय पर पूर्ण कर लें साथ ही स्वतंत्रता दिवस के दिन डॉक्टर, स्टॉफ सहित अन्य आवश्यक साधन-संसाधन उपलब्ध करना सुनिश्चित हो। ग्राउंड व्यवस्था की जिम्मेदारी लोक निर्माण एवं नगर पालिका परिषद बैकुंठपुर को सौंपी गई है, वहीं शामियाना टेंट एवं बैठक, मंच पर कारपेट एवं तिरपाल, माइक व्यवस्था, लोक निर्माण विभाग (विद्युत/यांत्रिक), राष्ट्रीय ध्वज एवं सफेद छाते की व्यवस्था रक्षित निरीक्षक पुलिस लाइन, बेरिकेटिंग हेतु बाँस बल्ली की व्यवस्था वन व लोक निर्माण विभाग, बेरिकेटिंग एवं लाइनिंग की व्यवस्था लोक निर्माण विभाग व रक्षित निरीक्षक पुलिस लाइन, साज-सज्जा, गमले एवं गुलदस्ते की व्यवस्था उद्यान विभाग, विद्युत व्यवस्था, अनुविभागीय अधिकारी विद्युत यांत्रिकी विभाग, कबूतर की व्यवस्था पशु चिकित्सा, गुब्बारे की व्यवस्था महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग विभाग, बैंड की व्यवस्था पुलिस अधीक्षक एवं जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान, आमंत्रण पत्र की छपाई एवं वितरण की व्यवस्था, जिला पंचायतएवं उप समाज कल्याण, प्रशस्ति पत्र के वितरण एवं छपाई की व्यवस्था आदिवासी विकास विभाग एवं जिला शिक्षा, मुख्य अतिथि के सत्कार की व्यवस्था लोक निर्माण विभाग एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं शहीद परिवार को लाने ले जाने तथा रुकवाने की व्यवस्था जिला पुलिस विभाग, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग एवं सर्व थाना प्रभारी कोरिया, परेड निरीक्षण हेतु खुली जिप्सी पुलिस अधीक्षकएवं रक्षित निरीक्षक पुलिस लाइन, चिकित्सा दल एवं प्राथमिक उपचार की व्यवस्था मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, उद्घोषक की व्यवस्था जिला शिक्षा अधिकारी एवं उदघोषक को कार्यक्रम (पल-प्रतिपल) की सूची समय पूर्व देने की व्यवस्था आदिवासी विकास एवं जिला षिक्षा अधिकारी तथा फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी की व्यवस्था की जिम्मेदारी ग्रामीण यांत्रिकी सेवा कोरिया को दी गई है।

संपादकीय

दुकानदारों के नाम सार्वजनिक समाज में विभेद पैदा हो रहा...

कांवड़ यात्रा के मार्ग पर दुकानदारों के नाम सार्वजनिक तौर पर प्रदर्शित करने के उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड प्रशासन के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम रोक लगा दी है। दो जजों की पीठ ने अपने फैसले में कहा कि खाना बेचने वालों को यह बताना जरूरी है कि वे किस तरह का खाना दे रहे हैं, लेकिन उस पर मालिक या कर्मचारियों का नाम सार्वजनिक करने के लिए जोर नहीं डाला जा सकता। पीठ ने विभिन्न याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड सरकार को नोटिस जारी करते हुए जवाब मांगा है। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से स्पष्टीकरण दिया गया कि आदेश का अनुपालन स्वैच्छिक है, लेकिन इसे बलपूर्वक लागू किया जा रहा है। प्रमुख विपक्षी दलों द्वारा इसकी निंदा की गई तथा इसे विभाजनकारी कदम बताया। इस आदेश से समानता के अधिकार, अस्पृश्यता, भेदभाव का निषेध तथा कोई भी व्यापार करने के अधिकार का हनन कहा गया। वर्षों से चली आ रही यात्रा पर पहले कभी इस तरह के कोई आदेश नहीं जारी किए जाते रहे हैं। कांवड़ मार्ग में आने वाले ढाबे/रेहड़ी स्वयं प्रचार करते हैं कि उनके यहां शुद्ध वैष्णव भोजन मिलता है। दूसरे फूड सेफ्टी एंड स्टैंर्डड एक्ट (एफएसएसएआई) व स्ट्रीट वेंडर्स एक्ट जैसे कानून पहले ही मौजूद हैं। जो खाद्य पदाथरे की गुणवत्ता सुनिश्चत करने का काम करते हैं। बाजार में मिलने वाले भोज्य पदार्थ स्वच्छ हों, उनमें किसी तरह की मिलावट या गंदगी न हो, यह जांचना स्थानीय प्रशासन का काम है। सवाल सिर्फ कांवड़ श्रद्धालुओं का ही नहीं है बल्कि यह हर उपभोक्ता का अधिकार है कि उसे शुद्ध-स्वच्छ खाना मिले। बीते कुछ सालों से राज्य सरकारें कांवड़ यात्रा में विशेष रुचि ले रही हैं, जबकि इन्हीं राज्यों में और भी तीर्थ स्थल हैं, जो बुरी तरह उपेक्षित हैं या वहां किसी तरह की सुविधाओं का ख्याल नहीं रखा जाता। हम सिर्फ धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र ही नहीं हैं बल्कि हमारी संस्कृति हमें सहिष्णुता व भाई-चारा भी सिखाती है। इस तरह के आदेशों से कारोबार बाधित होता है और नीचे के वर्ग को रोजगार या दिहाड़ी से हाथ धोना पड़ता है। साथ ही समाज में विभेद पैदा होगा। इस आदेश का सबसे ज्यादा नुकसान छोटे व गरीब दुकानदारों को होता, जो रोज कमाने-खाने वाले हैं। राज्य सरकारों को अदालत के हस्तक्षेप से पूर्व ही विचारपूर्वक निर्णय लेने की आदत डालनी होगी।

सत्ता के लिए समर्थन जुटाता बजट

योगेंद्र योगी

बजट पेश होते ही महाराष्ट्र से शिवसेना उद्धव गुट की नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने निशाना साधा कि यह बजट नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री बचाओ योजना का हिस्सा है। महाराष्ट्र के लिए कोई ऐलान नहीं किया गया। राज्य के विकास के लिए न कोई योजना न कोई फंड, महाराष्ट्र की उपेक्षा क्यों की गई मतदाताओं से सौदेबाजी करने में देश के सारे राजनीतिक दल एक जैसे हैं। सत्ता में आने के बाद राजनीतिक दल न सिर्फ हार का बल्कि जीत का हिसाब-किताब चुकता करने से नहीं चूकते। केंद्रीय बजट 2024 में ऐसा ही कुछ चुनावी राज्यों के साथ हुआ है। जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव हो चुके, बजट में उन्हें तो कुछ भी हाथ लगने का सवाल ही पैदा नहीं होता, लेकिन जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, केंद्र सरकार ने उनको भी अंगूठा दिखा दिया। हालांकि केंद्र सरकार का दावा है कि इस बजट में देश के सभी वर्गों और क्षेत्रो में संतुलन स्थापित किया गया है। इससे देश का सामूहिक और समान विकास होगा। इस बजट का ज्यादातर हिस्सा बिहार और आंध्रप्रदेश में चला गया। इससे बिगड़े संतुलन ने बाकी राज्यों का हिसाब बिगाड़ दिया। यह बजट गठबंधन की मजबूरी का बन कर रह गया, जिसमें बड़ा हिस्सा सिर्फ दो राज्यों तक सीमित होकर रह गया। गौरतलब है कि केंद्र की मौजूदा सरकार आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की तेलगूदेशम और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जनता दल युनाइटेड की बैसाखियों पर टिकी है। दोनों मुख्यमंत्रियों ने विशेष राज्यों का दर्जा देने की मांग पर दबाव डाला। केंद्र ने इसकी पूर्ति बजट में अलग योजनाओं के लिए प्रावधान करके कर दी। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने संसद में बजट तो पेश कर दिया, लेकिन अनुमान के मुताबिक बिहार और आंध्र प्रदेश ने केंद्र सरकार का बजट गड़बड़ा दिया। बजट के बड़े हिस्से पर इन दोनों राज्यों का कब्जा हो गया है। बिहार को कुल 58 हजार करोड़ तो आंध्र प्रदेश को 15 हजार करोड़ का विशेष पैकेज का ऐलान करना पड़ा। बजट पर गठबंधन सरकार का असर साफदिखा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडु बाजी मार ले गए। एनडीए सरकार ने फ्लिहाल दोनों राज्यों को स्पेशल स्टेटस तो नहीं दिया, लेकिन उसके बदले सरकार को भारी कीमत चुकानी पड़ी है। इसके एवज में उन राज्यों को नजरअंदाज करना पड़ा है, जहां इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जोकि बीजेपी या एनडीए के लिए काफी अहम हैं। केंद्रीय बजट में चुनाव वाले राज्य हरियाणा, महाराष्ट्र या झारखंड ही नहीं, बल्कि कई और अहम क्षेत्रों के लिए घोषणा नहीं हो सकी। बिहार-आंध्र के लिए विशेष पैकेज का असर यहां भी दिखा। विपक्ष ने इसे मुद्दा बनाना शुरू कर दिया है। उम्मीद थी कि बजट में नई ट्रेनों का ऐलान होता, लेकिन नहीं हुआ। महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड में इसी साल विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनावी राज्यों को बजट से बहुत उम्मीदें थीं। इन राज्यों के लिए बजट मिलना तो दूर, कोई उम्मीद भी नहीं जगी। लोकसभा चुनावों में अनुसूचित जाति और पिछड़ी जाति के वोट छिटकने की चिंता भी नजर नहीं आई। अन्य पिछड़ा वर्ग या अनुसूचित जाति-जनजाति के लिए कोई खास योजना नजर नहीं आई। उम्मीद की जा रही थी कि उपचुनावों और 3 राज्यों में होने वाले चुनावों को ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार 3.0 के पहले बजट में सरकार चुनावी राज्यों के लिए अपना खजाना खोल देगी। बजट में प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान शुरू करने का ऐलान किया गया है। जनजातीय समुदाय के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए शुरू किए जा रहे इस अभियान के तहत जनजातीय परिवारों को सरकारी योजनाओं के संपूर्ण कवरेज का लक्ष्य रखा गया है। इसमें जनजाति बाहुल्य 63 हजार गांवों को शामिल किया जाना है और पांच करोड़ जनजातीय लोग लाभान्वित होंगे। जनजाति बाहुल्य झारखंड की कुल आबादी में करीब 27 फीसदी भागीदारी जनजातियों की है। ऐसे में इस योजना का लाभ भी झारखंड को मिलने की उम्मीद की जा सकती है। पर ये योजनाएं पार्टी की ब्रैंडिंग नहीं कर पाती हैं। जनता यह मानकर चलती है कि ये सरकारी योजनाएं हैं, यह तो मिलना ही था। अगर इनकी जगह पर कोई लोन, कोई छात्रवृत्ति, कोई सहायता जैसी योजना शुरू की गई होती तो उसकी बात अलग होती। इसी तरह चुनावी राज्यों में कोई बड़ा प्रोजेक्ट शुरू करने की घोषणा हो सकती थी। हरियाणा और महाराष्ट्र में किसानों के वोट बहुत महत्वपूर्ण हैं। भारतीय जनता पार्टी की जरूरत थी कि किसानों के लिए बजट में कुछ ऐसी घोषणाएं की जाएं जिससे उन्हें अपनी जीवनशैली में बदलाव होने की कुछ उम्मीद जग सके। सरकार ने कृषि और इससे संबंधित क्षेत्रों के लिए एक लाख 52 हजार करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया है। वित्त मंत्री ने उत्पादन बढ़ाने और जलवायु के अनुकूल किस्मों के विकास पर जोर देने के लिए कृषि अनुसंधान व्यवस्था की व्यापक समीक्षा का ऐलान करते हुए यह भी कहा है कि 32 कृषि और बागवानी फसलों की नई 109 उच्च पैदावार वाली और जलवायु अनुकूल किस्में जारी की जाएंगी। सवाल यह है कि किसान को पैदावार बढ़ाने से क्या मिलेगा, जब तक फसल के बिकने की व्यवस्था नहीं होगी। बजट में किसानों के लिए बहुत कुछ करने के वादे किए गए हैं। कोई भी एक वादा ऐसा नहीं है जिससे किसानों को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचता दिख रहा हो। वित्त मंत्री ने यह भी कहा है कि 6 करोड़ किसानों और उनकी जमीन के ब्यौरे रजिस्ट्री में दर्ज किए जाएंगे, राष्ट्रीय सहकारी नीति लाई जाएगी जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में तेजी आएगी। हरियाणा और महाराष्ट्र के लिए बजट में सीधे कोई ऐलान नहीं किया गया है, लेकिन इन दोनों ही राज्यों की बड़ी आबादी कृषि और इससे संबंधित क्षेत्रों से जुड़ी है। हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड तीनों ही राज्यों में साल अंत तक विधानसभा का चुनाव होने वाला है। एनडीए हरियाणा और महाराष्ट्र में सत्ता बनाए रखने तो झारखंड में हेमंत सोरेन को सत्ता से बाहर करने की रणनीति में जुटा है। बीजेपी ने यहां चुनावी मुनादी कर दी, लेकिन बजट ने उसका खेल बिगाड़ दिया। विपक्ष इन राज्यों की उपेक्षा का आरोप लगाकर हमलावर है। चुनावों तक यह विरोध और भी तेज होने की संभावना जताई जा सकती है। महाराष्ट्र की तरह ही झारखंड राज्य के लिए भी अलग से इस बजट में कोई विशेष योजना या प्रावधान नहीं है, जबकि इस साल के अंत तक झारखंड में भी विधानसभा का चुनाव होने वाला है। हालांकि पूर्वोदय योजना, जिसे सरकार ने 'विकास भी विरासत भी' नाम दिया है, के तहत जिन पांच राज्यों को शामिल किया है, उनमें बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश के साथ झारखंड राज्य भी है। पांच राज्यों में गौर करें तो इनमें ओडिशा में बीजेपी की सरकार बन चुकी है।

विशेष लेख

पानी के लिए महिलाओं को दिन भर खटना.....

भारत डोगरा

हाल के विकास कार्यक्रमों में हर घर जल की योजना विशेष तौर पर चर्चित रही है, विशेषकर दूर-दूर के गांवों के संदर्भ में। इन गांवों के परिवारों और विशेषकर महिलाओं के समय का एक बड़ा भाग परिवार की पानी की जरूरतों को पूरा करने में ही जाता रहा है। दिन भर प्रयास करने के बाद भी कई बार पानी जैसी बुनियादी जरूरत की आपूर्ति ठीक से नहीं हो पाती थी और गर्मी के दिनों में तो जैसे जल-संकट का हाहाकार ही मच जाता था। इस स्थिति में जब भारत सरकार ने हर घर में नल का जल पंहुचाने की समयबद्ध योजना आरंभ की तो स्वाभाविक ही था कि इस योजना से बहुत उम्मीदें जुड़ गई। आज स्थिति यह है कि कहीं इस जल जीवन मिशन की उपलब्धि का उत्साह है तो कहीं अनेक समस्याओं को लेकर चिंता भी है। उपलब्धि और कठिनाइयों के बीच गांव किस स्थिति में है, यह जानने के लिए इन पंक्तियों के लेखक ने हाल में निवाड़ी जिले (मध्य प्रदेश) के अनेक गांवों का दौरा किया। यह बुंदेलखंड क्षेत्र, विशेषकर गर्मियों के दिनों में, जल-संकट के लिए चर्चा में रहा है। यह सव्रेक्षण भीषण गर्मी के दिनों में किया गया और मौसम सुधरने पर इससे बेहतर स्थिति सामने आएगी। इस क्षेत्र में सुखद स्थिति यह है कि गांव-स्तर की जल समितियों के स्तर पर अनेक गांववासी खुल कर अपनी समस्याओं को उठा रहे हैं। इस क्षेत्र में परमार्थ संस्था ने 'जल सहेली' महिला कार्यकर्ताओं के माध्यम से जल के मुद्दे पर जागरूकता फैलाई है और ग्राम सभाओं तथा पंचायतों में भी उनके विचारों को अधिक महत्त्व मिलने लगा है। इस तरह पानी के मुद्दे पर जनसक्रियता बढ़ी है और लोगों की समस्याओं के समाधान की संभावना बढ़ी है। जल-जीवन मिशन के अंतर्गत जब पाइपलाइनों को बिछाया गया, नल लगाए गए तो इस जागरूकता के कारण लोग बेहतर ढंग से गलतियों को रोक सके और स्थानीय ज्ञान के आधार पर बेहतर व्यवस्था कर सके। बहेरा गांव में यह सक्रियता अधिक है और अधिकांश परिवारों के नल लग गए हैं, पानी भी पहुंचने लगा है, फिर भी लगभग 12 प्रतिशत घरों में अभी पानी आना शेष है। ऊंचाई में पानी पंहुचाने में कठिनाई है, और स्कूल में भी। स्कूल के बोर में पानी गर्मी के चरम के दिनों में समाप्त हो गया और पास के एक अन्य कुएं में भी समाप्त हो गया। जिन गांवों में पानी आता है, सुबह आधे घंटे आता है। भीषण गर्मी के कारण यह गर्म होता है और पिया नहीं जाता। अत- पीने के लिए अनेक परिवार इस समय भी कुएं या हैंडपंप से ही पानी लाते हैं। नामापुरा गांव में अधिकांश घरों में पानी पहुंच रहा है पर ऊंचाई वाली बस्ती में अभी नहीं पहुंचा है। यहां पानी ले जाने के लिए तैयारी चल रही है।दो परिवारों ने कहा कि उनके नल भी नहीं लगे क्योंकि उनके घर पाइपलाइन की राह से कुछ हट कर हैं। नामापुरा गांव में नल में जो पानी आ रहा है, वह स्वच्छ नहीं है और लोग इसे पीने के लिए उपयोग में नहीं लाते। वे योजना बना रहे हैं कि टंकी संचालक के पास जाकर पता लगाएं कि गंदा पानी क्यों भेजा जा रहा है। इस तरह गांव अभी पहले के स्रेतों पर ही पेयजल के लिए आश्रित हैं पर इसमें एक बड़ी समस्या यह है कि इस पानी को पीने से पथरी की समस्या उत्पन्न हो रही है। गांववासियों ने बताया कि पांच-छह लोगों का पथरी का ऑपरेशन हो चुका है। पथरी से जुड़े दर्द और परेशानी की शिकायतें तो इससे कहीं अधिक लोगों को है और डॉक्टरों ने बताया है कि पानी के दूषित होने के कारण ऐसा हो रहा है। अब आगे गांव को तैयारी यह करनी है कि कम से कम नई पाइपलाइन का पानी स्वच्छ मिले जिससे वे पेयजल की आवश्यकताएं इससे पूरी कर सकें। चुरारा गांव में विभिन्न मुहल्लों में स्थिति भिन्न है जहां दलित, आदिवासी और कुशवाहा मोहल्लों में अधिक समस्याएं हैं। कुछ कुशवाहा परिवारों ने नल को उतार दिया है क्योंकि उनके अनुसार जब पानी ही नहीं आ रहा है तो इसे क्यों रखें पर कुछ अन्य मोहल्लों में स्थिति बेहतर है। कुछ लोगों ने कहा कि गर्म पानी पिया नहीं जाता। पहले मटके में रखना पड़ता है। फिर बाद में पी सकते हैं। पानी रोज नहीं आता है।

ठोस कचरे के समाधान को मिले प्राथमिकता

सत्यपाल वशिष्ठ

अगर इस ओर समय पर ध्यान नहीं दिया गया तो भारत को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। भारत को पश्चिमी देशों से सीख लेकर 'वेस्ट से कमाई' की तरफ जाना चाहिए। इस क्षेत्र में रोजगार की भी काफी संभावनाएं हैं भारत की अर्थव्यवस्था जिस तेजी से बढ़ रही है, शहरीकरण भी उसी तेजी से बढ़ रहा है। भारतीय गांव भी विकसित कस्बों का रूप ले रहे हैं। लोगों के उपभोग का पैटर्न भी बदलता जा रहा है, जिसका नतीजा यह है कि ठोस अपशिष्ट भी अधिक मात्रा में उत्पन्न हो रहा है। अगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की ओर समय पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह समस्या गंभीर रूप धारण कर लेगी। इसलिए सभी हितधारकों को आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ प्राकृतिक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए एक साथ आगे आना होगा। भारत में विश्व की लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या है और यह वैश्विक नगरपालिका अपशिष्ट का 12 प्रतिशत हिस्सा उत्पन्न कर शीर्ष 10 देशों में है। प्रतिदिन 621000 टन कचरा पैदा करके अमरीका सबसे आगे है। शीर्ष 10 कचरा पैदा करने वाले देशों में चार विकासशील देश हैं- ब्राजील, चीन, भारत और मैक्सिको। इसका मुख्य कारण शहरी आबादी का बढ़ता आकार है। शहरवासी उच्च उपभोग वाली जीवन शैली अपना रहे हैं। कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में जर्मनी, दक्षिण कोरिया और स्वीडन ने मिसाल कायम की है। दि एनर्जी एंड रिसोर्स इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत प्रति वर्ष 62 मिलियन टन कचरा उत्पन्न करता है। इसमें 43 मिलियन टन (70 प्रतिशत) एकत्रित किया जाता है जिसमें से 12 मिलियन टन का ही सही ढंग से निपटान होता है और 31 मिलियन टन को लैंडफ्लि साइट पर डाल दिया जाता है। उपभोग के बदलते पैटर्न, जनसंख्या का बढ़ता आकार और तेजी से बढ़ते आर्थिक विकास के साथ अनुमान है कि 2030 तक शहरी ठोस अपशिष्ट की मात्रा बढक़र 165 मिलियन टन प्रति वर्ष हो जाएगी। अगर इस ओर समय पर ध्यान नहीं दिया गया तो भारत को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। भारत को पश्चिमी देशों से सीख लेकर 'वेस्ट से कमाई' की तरफ जाना चाहिए। इस क्षेत्र में रोजगार की भी काफी संभावनाएं हैं। भारत और जर्मनी के बीच जल और अपशिष्ट प्रबंधन पर द्विपक्षीय समझौता 2019 में हुआ। दोनों पक्षों ने समुद्री कूड़े, अपशिष्ट से ऊर्जा (भष्मीकरण), जैव मिथेन, कचरा ढलाव, जल गुणवत्ता प्रबंधन, स्थानीय निकायों को प्रशिक्षण आदि को हाथ बढ़ाया है, जो निश्चित तौर पर कचरा प्रबंधन में बहुत सहायक होगा और यह आवश्यक भी है। अब समय आ गया है कि भारत को इस समझौते का भरपूर फायदा उठाना चाहिए क्योंकि जर्मनी कचरा प्रबंधन में विश्व में पहले पायदान पर है। इससे रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे, संसाधन संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा, पर्यावरण भी शुद्ध होगा तथा अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी तथा खाद, बायोगैस तथा बिजली उत्पादन में सहायता मिलेगी। भारत को स्वीडन की रीसाइकलिंग प्रणाली का भी अध्ययन करना चाहिए जो इतनी कुशल है कि उस देश में कचरा लगभग समाप्त हो गया है। वह अपनी आधी बिजली नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करता है। स्वीडन के लोग प्रकृति के बीच रहना चाहते हैं और जानते हैं कि प्रकृति और पर्यावरण के मुद्दों पर क्या करना चाहिए। इन लोगों को जागरूक करने के लिए लंबा समय लगा, कि चीजों को बाहर न फेंकें ताकि उन्हें रीसाइकिल और पुन: उपयोग किया जा सके। कॉलोनियों में स्वचालित वैक्यूम सिस्टम हैं जो संग्रह/परिवहन की आवश्यकता समाप्त करते हैं। स्वीडन में भूमिगत कंटेनर सिस्टम का भी उपयोग किया जाता है। ये सडक़ों पर कई जगह उपलब्ध होते हैं और दुर्गंध से बचा जा सकता है। यहां जो मिशन है, लोगों को कचरे के रीसाइकलिंग के लिए भेजने से रोकना है। भारत में इंदौर को सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया है, जबकि सूरत और नवी मुंबई ने क्रमश: दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया है। परंतु भारत के अन्य शहरों जैसे हैदराबाद, बंगलूरू आदि में स्थिति संतोषजनक नहीं है। हालांकि भारत में ठोस अपशिष्ट से निपटने के लिए नियम लागू हैं जिनमें ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 तथा जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 भी शामिल है, जिसके अंतर्गत देश भर में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं से निकले जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन होता है। इन नियमों के होते हुए भी ठोस अपशिष्ट का निपटान सही नहीं हो रहा है। इन नियमों के सख्त कार्यान्वयन की आवश्यकता है। दिल्ली सरकार ने एनजीटी को आंकड़े दिए थे, जिनके अनुसार ओखला लैंडफ्लि साइट पर 2019 तक 60 लाख टन पुराना कचरा डंप किया गया था, जो अब और बढ़ा है। यह चिंतनीय है। हाल ही में भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नई दिल्ली में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या के समाधान के लिए अपनाए जा रहे अपर्याप्त उपायों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उच्चतम न्यायालय ने ध्यान दिलाया है कि राष्ट्रीय राजधानी में प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले 11000 टन ठोस कचरे में से लगभग 3800 टन कचरे का उचित निपटान नहीं किया जाता है। इस अनुपचारित अपशिष्ट का बड़ा हिस्सा लैंडफ्लि में जमा हो रहा है जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। इसके समाधान के लिए दिल्ली नगर निगम, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद और दिल्ली छावनी बोर्ड को नोटिस जारी किया है और स्पष्टीकरण मांगा है। दिल्ली को प्रमुखता से इंदौर, जर्मनी, स्वीडन की ठोस कचरा प्रबंधन प्रणाली का गहन अध्ययन कर इन्हें अपनाना चाहिए। देश में कुल 3842 स्थानीय नगर निकाय हैं जिनमें 247 नगर निगम, 1500 नगरपालिकाएं, 2100 नगर पंचायतें और 56 छावनी बोर्ड तथा 263274 ग्राम पंचायतें हैं। इनमें कुछ को छोड़ कर अधिकतर निकायों में कचरा प्रबंधन के लिए स्वचालित अपशिष्ट पुनर्चक्रण मशीनें नहीं हैं। सरकार को सभी निकायों में आधुनिक मशीनें लगाकर शून्य अपशिष्ट का लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

आरक्षण भारतीय राजनीति की धुरी.....

डॉ. आशुतोष कुमार

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जब भारतीय संविधान में आरक्षण के प्रावधान को शामिल किया था, तब उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि आरक्षण एक समय भारतीय राजनीति की धुरी बनकर राजनेताओं के लिए एक ऐसा अमोघ मंत्र बन जाएगा, जिसका इस्तेमाल किसी के कल्याण के लिए कम और किसी को परास्त करने के लिए ज्यादा किया जाएगा। आज आरक्षण के पीछे किसी पिछड़े या वंचित समाज के कल्याण की भावना कम और राजनीतिक स्वार्थ अधिक दिखती है। सही मायने में आज आरक्षण राजनीति का झुनझुना बन गया है, जिसे चुनाव जैसे विशेष मौकों पर जनता को रिझाने के लिए बजाया जाता है। बहरहाल, आरक्षण एक बार फिर चर्चा में है। आरक्षण को लेकर चर्चा के केंद्र बिंदु में है कर्नाटक। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने निजी क्षेत्र की नौकरियों में कन्नड़ लोगों के लिए 100 प्रतिशत आरक्षण को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पहले एक पोस्ट की थी, जिसे बाद में उन्होंने हटा लिया था। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट किया था, जिसमें कहा गया है कि कैबिनेट ने कर्नाटक में निजी उद्योगों और अन्य संगठनों में प्रशासनिक पदों के लिए 50 प्रतिशत और गैर-प्रशासनिक पदों के लिए 75 प्रतिशत आरक्षण तय करने वाले विधेयक को मंजूरी दी। सिद्धारमैया ने पोस्ट में कहा था, 'हमारी सरकार की इच्छा है कि कन्नड़ लोगों को अपनी जमीन पर आरामदायक जीवन जीने का अवसर दिया जाए हम कन्नड़ समर्थक सरकार हैं। हमारी प्राथमिकता कन्नड़ लोगों के कल्याण का ध्यान रखना है। उन्हें कन्नड़ भूमि में नौकरियों से वंचित होने से बचाया जाए। हम कन्नड़ समर्थक सरकार हैं। हमारी प्राथमिकता कन्नडिगास के कल्याण की देखभाल करना है। जब उनके इस पोस्ट पर इस पर हर तरफ छीछालेदर होने लगा। विरोध में प्रतिक्रियाएं आने लगीं, तो दो दिन बाद उन्होंने सोशल मीडिया 'एक्स' प्लेटफॉर्म पर से पिछली पोस्ट हो हटाकर उसमें बदलाव कर दिया। कर्नाटक सरकार ने फिलहाल इस पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही कहा जा रहा है कि कर्नाटक सरकार इस बिल पर पुनर्विचार करेगी, लेकिन यहां मौजू सवाल यह है कि आखिर इसकी जरूरत ही क्यों पड़ी। इसके पीछे सरकार की मंशा क्या है? कहीं आरक्षण की आड़ में देश के संघीय ढांचे को ध्वस्त करने की कोशिश तो नहीं की जा रही? अगर नहीं, तो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए देश की एकजुटता और अखंडता पर प्रहार क्यों किया जा रहा है। आमतौर पर इस तरह की कोशिश क्षेत्रीय दल की सरकार में की जाती है, क्योंकि क्षेत्रीय दल अपने को उस राज्य के प्रति ज्यादा उत्तरदायी समझते हैं, जहां उनकी सरकार होती है। हालांकि इस तरह की सोच भी देश के संघीय ढांचे के लिए खतरनाक है। फिलवक्त कर्नाटक में तो कांग्रेस की सरकार है, फिर सिद्धारमैया सरकार ने ऐसी संकीर्ण मानसिकता क्यों दिखाई। जाहिर तौर पर इससे राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को नुकसान उठाना पड़ेगा, लेकिन यहां चिंता का विषय कांग्रेस का नुकसान नहीं, अपितु राष्ट्र का और देश के संघीय ढांचे के नुकसान को लेकर है। अगर सभी राज्य सरकारें अपनी मर्जी की मालिक हो जाएंगी, तब तो देश का स्वरूप ही बिखर जाएगा। देश है, देश का एक स्वरूप है, उसकी अस्मिता है, तभी आरक्षण है। यह कहना ग़लत न होगा कि भारत में आरक्षण की व्यवस्था सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को समृद्ध बनाने के लिए हुई थी, मगर समय के साथ आरक्षण वोट बैंक की राजनीति का शिकार बनती चली गई और अब तो स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि आरक्षण की आंच देश की संघीय व्यवस्था पर भी आने लगी है। किसी राज्य में आरक्षण का दायरा बढ़ाने के लिए देश के स्वरूप और उसके संघीय ढांचे को ध्वस्त नहीं किया जा सकता। यह सहज ही समझा जा सकता है कि जब सभी राज्य सिर्फ अपने प्रदेश के लोगों को नौकरी देने लगेंगे। वहां के प्राइवेट सेक्टर में सिर्फ उसी राज्य के लोगों को रखा जाने लगेगा, तब भारत एक संघ रह जाएगा क्या? इसलिए राजनीतिक दलों और राज्य की सरकारों को यह जरूर सोचना होगा कि वे अपने प्रदेश के विकास की बात जरूर सोचें, प्रयास जरूर करें कि प्रदेश के लोगों को अपने ही राज्य में रोजी-रोजगार मिले, किंतु इसका भी ख्याल रखें कि देश की समावेशी संस्कृति को नुकसान न पहुंचे। भारतीय संविधान के भाग तीन में समानता के अधिकार की भावना निहित है। इसके अंतर्गत अनुच्छेद 15 में प्रावधान है कि किसी व्यक्ति के साथ जाति, प्रजाति, लिंग, धर्म या जन्म के स्थान पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। अनुच्छेद 15(4) के मुताबिक यदि राज्य को लगता है तो वह सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े या अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के लिए विशेष प्रावधान कर सकता है। वहीं, अनुच्छेद 16 में अवसरों की समानता की बात कही गई है। अनुच्छेद 16(4) के मुताबिक यदि राज्य को लगता है कि सरकारी सेवाओं में पिछड़े वगरे को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है तो वह उनके लिए पदों को आरक्षित कर सकता है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, गुरूवार 01 अगस्त 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

वाटर हार्वेस्टिंग पीट बनवाने कार्य को प्राथमिकता देने के आयुक्त के निर्देष

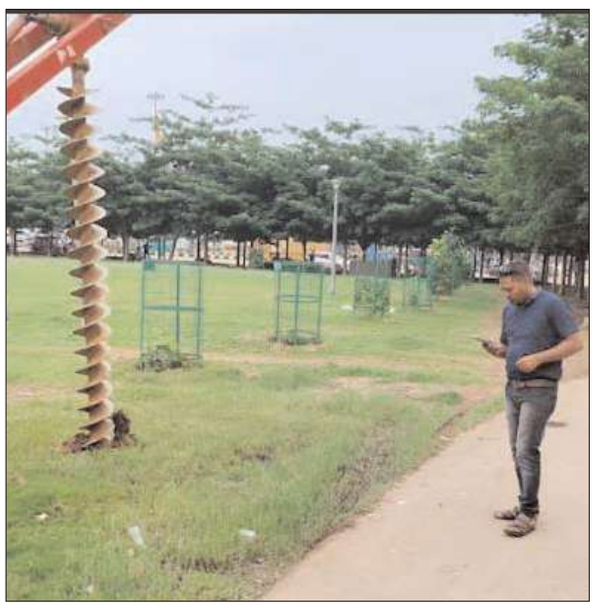

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग की लोककल्याणकारी मंषा के अनुसार रायपुर जिला प्रषासन के मार्गदर्षन में नगर पालिक निगम रायपुर की समाज हितकारी पहल पर राजधानी शहर में लगातार गिरते भूजल स्तर में वृद्धि कर भूजल स्त्रोतो का समुचित संरक्षण करने बिल्डरों, छत्तीसगढ़ क्रेडाई ग्रीन आर्मी ऑफ रायपुर सहित विभिन्न एनजीओ की सहभागिता से जियो हाईड्रोलॉजिस्ट के माध्यम से इनोवेटिव पद्धति से अधिक से अधिक संख्या में रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट बनाने का कार्य तेज गति से निरंतर प्रगति पर है। लगभग 500 स्थानों पर रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट तैयार किये जा चुके है। इससे छोटे-छोटे सेक्टर में प्रत्येक पीट से लगभग 2 लाख लीटर वर्षा जल संग्रहण का कार्य किया जा सकेगा। आयुक्त श्री अबिनाष मिश्रा ने सभी जोन कमिष्नरों सहित कार्यपालन अभियंताओं को बिल्डरों, एनजीओ, समाज की सहभागिता से अधिक से अधिक संख्या में इनोवेटिव पद्धति से जियो हाईड्रोलॉजिस्ट के सहयोग से रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट अधिक से अधिक वर्षा जल संग्रहण करने प्राथमिकता से तैयार करवाने का कार्य सुनिष्चित करने के निर्देष दिये है।

जोन 6 के क्षेत्र में ऐतिहासिक रावणभाठा मैदान के किनारो में अंतरराज्यीय बस स्टैण्ड के किनारो में, मुख्य मार्ग के किनारो में सुरक्षित स्थानों पर लगभग 46 रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट तैयार किये जा चुके है। मेट्रो पार्क सड्डु में 50 रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट तैयार किये जा चुके है। अवनी रेवेन्यू में 25 रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट एवं वॉलफोर्ट एलेक्सिया में में 10 रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट , जोन 10 में 13 स्थानों पर रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट शासन एवं जिला प्रषासन की मंषा अनुरूप जियो हाईड्रोलॉजिस्ट के निर्देषन में तैयार किये जा चुके है एवं यह कार्य निरंतर प्रगति दिन प्रगति पर है। आयुक्त के निर्देषानुसार कार्यपालन अभियंता श्री अंषुल शर्मा रैन वाटर हार्वेस्टिंग पीट संदर्भित अभियान की निरंतर मॉनिटरिंग कर रहे है एवं जियो हाईड्रोलॉजिस्ट डॉ. के. पाणीग्रही इसमें निरंतर सहभागिता प्रदान कर रहे है।

विशेषज्ञता हासिल करने परमात्मा से कनेक्शन जरूरी : मुनि श्री प्रियदर्शी विजय

रायपुर (विश्व परिवार)। विवेकानंद नगर स्थित श्री संभवनाथ जैन मंदिर में जारी आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 की प्रवचन माला में बुधवार को रायपुर के कुलदीपक तपस्वी रत्न मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. ने कहा कि विशेषज्ञता हासिल करने के लिए परमात्मा से कनेक्शन जरूरी है। केवल तप और ध्यान से परमात्मा से कनेक्शन नहीं हो सकता। आप नियम से घर में पूजा कर लिए,उपवास कर लिए लेकिन क्या आपको विचार आता है कि मंदिर में जाकर परमात्मा के साथ आधा घंटे बातें की जाए ? जब प्रभु के सामने बैठकर आत्म मंथन करोगे तब विशेषज्ञता को हासिल करोगे। आराधना को दृष्टि बनाने के लिए उपाश्रय में आओ, परमात्मा के साथ कनेक्ट हो और आत्म चिंतन करो कि यहां से जाने के बाद आपकी गति क्या होगी। साधु का पहला कनेक्शन परमात्मा के साथ और अरिहंतों के साथ होता है।

मुनिश्री ने कहा कि जीव जब

एक गति से दूसरे गति में जाता है तो संबंध,राग छूट जाता है,वस्तुएं छूट जाती है लेकिन वृत्ति अर्थात अपने संस्कार लेकर जाता है। यदि आपके जीवन में विशेषज्ञता होगी तो आपके जीवन में धर्म आने में सफलता मिलेगी।

चौमासा में प्रवचन श्रवण का अवसर चार माह होता है। इन चार माह के बाद आपको आपकी विशेषज्ञ पता चलेगी। मन से आपका कनेक्शन अरिहंत परमात्मा के साथ होना चाहिए। हमेशा धर्म की आराधना करनी चाहिए इससे सद्गति प्राप्त होती है। परमात्मा के दर्शन के संस्कार लेकर देवलोक जाओगे तो देवलोक में सर्व वैभव का दृश्य भी आपको विचलित नहीं कर सकेगा और यदि संस्कार विहीन होंगे तो वैभव में फंसकर कुछ हासिल नहीं होगा। चारों ओर वैभव को देखकर भी परमात्मा के साथ अच्छा कनेक्शन होगा,तब ही आपकी विशेषज्ञता सार्थक होगी।

सद्गुरु तीर्थंकर परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग है बुजुर्गों की सेवा - मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी

ओजस्वी प्रवचनकार मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने आज की प्रवचन माला में कहा कि हमें सदैव सेवा करनी चाहिए। सेवा करते जाओ, कुदरत आपको उससे भी बड़ी सेवा का मौका देगी। हमेशा गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए। जिनसे आपको सीख मिली वह आपके गुरु हैं। लौकिक गुरु मुख्य रूप से आपके माता-पिता हैं। यदि मां की फटी हुई साड़ी और पिता की फटी हुई चप्पल व कपड़े बदलने का आपको ध्यान नहीं है तो जो आप धर्मगुरु की सेवा करते हो वह व्यर्थ है। जो अपने सांसारिक गुरुओं की सेवा करते हैं उसे सद्गुरु मिलते हैं और जो सद्गुरु की सेवा करते हैं उन्हें परमात्मा, तीर्थंकर प्राप्त होते हैं। जो साधुओं की निंदा करते हैं उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता है। आपको यदि तीर्थंकर परमात्मा तक पहुंचना है, सद्गुरु तक पहुंचना है तो अपने बुजुर्गों की सेवा करो।

सात प्रकार से करें अपने बुजुर्गों की सेवा

मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने कहा कि हमें सात प्रकार से बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए और कैसे करनी चाहिए यह भी समझना आवश्यक है। क्रमश: मुनिश्री ने बताया कि

(1) बुजुर्गों की सेवा हमेशा बिना फरियाद,बिना शिकायत के करनी चाहिए। (2) मन से सेवा करनी चाहिए। बेमन से की गई सेवा भी व्यर्थ होती है। (3) बगैर आमंत्रण दिए सेवा करनी चाहिए। आप सेवा किसी के बोले बगैर करेंगे तो ही अच्छा होगा। (4) बगैर थके सेवा करनी चाहिए। (5) बगैर गिनती की सेवा करनी चाहिए। सेवा कार्य को अभी गिनना नहीं चाहिए। (6) बगैर प्रतिक्रिया की सेवा करनी चाहिए। (7) स्वयं सेवा करनी चाहिए। सेवा कभी दूसरों के भरोसे नहीं की जाती।

गुरु भक्ति से शुरू होती है असीम आनंद की यात्रा:भावलिंगी संत

गुरु भक्ति की बदौलत मिलती है सारी दौलत - आचार्य श्री विमर्शसागर जी

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। गुरु से शुरू होती है एक यात्रा भक्ति की, गुरु से शुरू होती है एक यात्रा श्रद्धा की,गुरु से शुरू होती है एक यात्रा आनंद की, गुरु से शुरू होती है एक यात्रा आत्मा से परमात्मा बनने की। । गुरु सीडी की तरह होते हैं और परमात्मा मंजिल की तरह होते हैं। जिन्हें सीडी प्राप्त हो जाती है उनकी मंजिल को पाने की यात्रा सुगम, सहज और सरल हो जाया करती है। उक्त उद्?गार

परम पूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक आदर्श महाकवि भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ने कृष्णानगर जैन मंदिर में धर्म सभा को संबोधित करते हुये व्यक्त किये। आचार्य श्री ने गुरुभक्ति की महिमा बताते हुये कहा कि -जिसके हृदय में गुरुभक्ति का वास होता है वह गुरु के प्रति इतने समर्पण के भाव से भरा होता है कि उससे अगर कोई पूछे कि तीन लोक कभी संपदा और गुरु चरण में से तुम किसे चुनोगे तो गुरु भक्ति से भरा हुआ बह गुरुभक्त तीन लोक की संपदा को छोड़कर गुरु चरणों भी उस दौलत को स्वीकार करेगा जिसकी बदौलत दुनिया की सारी दौलत प्राप्त होती है। गुरु भक्ति से जीवन फूलों की तरह महकने लगता है। आत्म हित की ओर कदम बढ़ाने से पहले गुरु की ओर कदम बढ़ाना जरूरी है। धन्य हैं वे जीव जिन्हें सुबह होते ही प्रभु और गुरु के पर भी याद आती है। प्रभु या गुरु के दर तक पहुँचना ती सरल है पर गुरु तक पहुंचने के बाद गुरु की पाना बहुत कठिन बात है। भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठपुत्र चकवर्ती भरत जिनके नाम से आज हमारा देश भारत कहलाता है उन प्रथम चक्री का पुत्र मारीचि साक्षात् समोशरण मे प्रभु को पाकर भी वह गुरु को नहीं पा सका। जब भी सद्?गुरु के पास जाने का सौभाग्य जगे तो गुरु से अपना भविष्य मत पूछना, बरस इतना ही पूछना कि मैं आपकी भक्ति के लायक बन पाया है या नहीं। आप मुझे हमेशा अपने चरणों का सेवक बनाये रखना, ये वो भावना है जो आपके जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बना देगी। आचार्य श्री के द्वारा प्रतिदिन भक्तामर महिमा भी विशेष व्याख्या प्रतिदिन प्रात: 8:45 पर शाम को टू डेज सोलूशन होता है।

अपनी शक्ति को सही दिशा में लगाकर कार्य करने से अपार सफलताऐं प्राप्त हो सकती है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी

इंदौर (विश्व परिवार)। किसी से किसी के साथ तुलना न करो, किसी की किसी के साथ प्रतिस्पर्धा न हो, जो शक्ती आप लोग आपस में लड़ने झगड़ने में लगातेहै,उसी शक्ती को सृजन शीलता में लगाकर आप अपने अंदर अपार संभावनाओं को जन्म दे सकते है। उपरोक्त उदगार आचार्य विद्यासागर सभा मंडप मोहताभवन में मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज ने प्रात:कालीन धर्म सभा को सम्बोधित करते हुये व्यक्त किये -मुनि श्री ने कहा कि व्यक्ति की जैसी सोच होती है,उस अनुसार उसकी प्रवत्ति हो जाया करती है,प्रत्येक मनुष्य में क्रियेटिव ,कंस्टिरेटिव, डिष्टिरेटिव, काम्पटेटिव चार प्रकार की सोच हुआ करती है। उन्होंने कहा में एक स्थान पर गया था नगर प्रवेश पर नारियल के बेस्टेज मटेरियल से एक सुंदर गेट बनाया था, यह सोच उसके कंस्टिरेटिव सोच को दर्शाती है,वंहीं एक पिता शरावी था उसके दो बेटे थे बड़ा बेटा पिता को देख शरावी बन गया ,जब छोटे बेटा से पूंछा गया कि तुम शराब क्यों नहीं पीते तो उसने जबाब दिया कि मेंने अपने पिता की शराब पीकर के दुर्दशा देखी है। मुनि श्री ने कहा एक की सोच डिस्टिरेटिव है वंही दूसरे की सोच क्रियेटिव अपनी सोच को कंस्टेटिव और क्रियेटिव बनाइये प्रतिस्पर्धात्मक नहीं उन्होंने कहा आजकल तो नर्सरी के छोटे छोटे बच्चे में भी काम्पटीशन भर दिया जाता है,यह एक नैगेटिव एप्रोच है,मुनि श्री ने कहा कि जैसे सम्पर्क में आप रहेंगे वैसी विचार धारा बनेगी उन्होंने

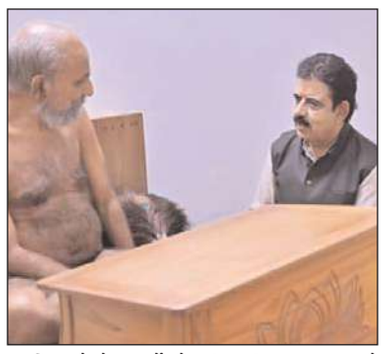

कहा कि पहले तो सम्पर्कों को धू?ना प?ता था आजकल तो सारे संपर्क आपकी जेब में है, सुबह से उठकर टी.व्ही खोलते हो समाचार देखते हो तीन मरे तेरह घायल और तो और कोई घटना घट जाती है तो घंटो टी.व्ही पर फिजूल की वहस चलती रहती है और आप लोग घंटों समय बरबाद करते है मुनि श्री ने शोसल मीडिया और समाचारों को पढ़ने सुनने पर कहा कि इससे आपके माइंड में नैगेटिविटी आती है अत: एक बार न्यूज फास्टिंग करो देखना आपका जिस काम में घंटो समय बरबाद करते थे अच्छे कार्यों के लिये समय निकल आऐगा उन्होंने सभी उपस्थित श्रद्धालुओं को एक दिन के लिये न्यूज फास्टिंग का उपदेश दिया उन्होंने कहा कि अपने आपको आगे बढ़ाने के लिये फिजूल की बातें और विचारों के संक्रमण से तथा व्यसनों से दूर रहिये उन्होंने एक घटना सुनाते हुये कहा कि अकबर ने बीरबल से कहा कि हमारे राज्य के लोगों की मेरे बारे में कैसी सोच है? बीरबल ने कहा नहीं हुजूर सब की एक सी राय है । तो अकबर ने बीरबल से साबित करने का आदेश दिया।

बीरबल ने नगर में ढोंढी पिटबाई कि कल प्रात: राजा सा. दूध के कुंड में स्नान करेंगे आप सभी लोग एक लोटा दूध सुवह होंने के पहले डाल दें। राजा का आदेश था एक सज्जन ने लौटा दूध का न डालकर पानी डाल दिया विचारों का संक्रमण ऐसा फैला कि सुवह हुई देखा कि कुंड तो पानी के कुण्ड पानी से भरा हुआ है। घटनाएं हमारे जीवन में घटती है उन घटनाओं को अपने जीवन में रस बनाकर उन घटनाओं से आनंद लीजिये। धर्म प्रभावना समिति इंदोर के मीडिया प्रभारी राहुल जैन एवं प्रवक्ता अविनाश जैन विदिशा ने उपरोक्त जानकारी देते हुये बताया प्रतिदिन प्रात: 6 से? बजे तट जैनम शिक्षण शिविर काअध्यन तत्पश्चात अभिषेक एवं शांतिधारा तत्पश्चात मुनि श्री की देशना सांयकाल शंकासमाधान मुनि श्री की बाणी का प्रतिदिन लाईव प्रसारण जिनवाणी एवं पारस चैनल पर चल रहा है। आप सभी लाभ उठाइये (अविनाश जैन) चित्र स्थानीय सांसद शंकर ललवानी मुनि श्री से आशीर्वाद लेते हुये।

कलिंगा विवि ने जुडेक्स 2.0 मूट कोर्ट प्रतियोगिता और संकाय विकास का ऐतिहासिक आयोजित

रायपुर(विश्व परिवार)। कलिंगा विश्वविद्यालय के विधि संकाय ने दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का सफ्लतापूर्वक आयोजन किया । जुडेक्स 2.0 सुराना और सुराना राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून मूट कोर्ट प्रतियोगिता और श्उन्नत शिक्षण शिक्षाशास्त्र और अनुसंधानश् पर एक व्यापक छह दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम एफ्डीपी।

जूडेक्स 2.0 के वर्चुअल राउंड की शुरुआत उत्तराखंड उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश और उत्तराखंड लोक सेवा न्यायाधिकरण के अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति उमेश चंद्र ध्यानी की गरिमामयी उपस्थिति के साथ हुई। न्यायमूर्ति ध्यानी के प्रेरक संबोधन में उभरते कानूनी पेशेवरों के करियर को आकार देने में मूट कोर्ट प्रतियोगिताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। यह आयोजन कलिंगा विश्वविद्यालय और सुराना एंड सुराना के

बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है।

विधि संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर डॉ अजीमखान बी पठान ने उत्साहपूर्ण स्वागत भाषण दिएाए जिसके बाद कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ आरण् श्रीधर ने मुख्य भाषण दिया जिसमें उन्होंने छात्रों में कानूनी कौशल और वकालत कौशल बढ़ाने में ऐसी प्रतियोगिताओं के महत्व को रेखांकित किया। प्रीतम सुराना पार्टनर. विवाद समाधान एवं प्रमुख . शैक्षणिक पहलए सुराना एंड सुराना इंटरनेशनल अटॉर्नीज ने भी अपने विचार साझा किए तथा प्रतिभागियों एवं संकाय सदस्यों को प्रेरित किया। पूरे भारत से 20 से अधिक टीमों ने भाग लियाए जो मानवाधिकार मुद्दों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सेमीफाइनल और फाइनल 17 अगस्त 2024 को नया रायपुर में कलिंगा विश्वविद्यालय परिसर में होने वाले हैं। इसके साथ हीए कलिंगा विश्वविद्यालय ने श्उन्नत शिक्षण शिक्षाशास्त्र और अनुसंधानश् पर छह दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का भी आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉण् आरण् श्रीधर और विधि संकाय के अधिष्ठाता प्रोण् डॉण् अजीम खान पठान द्वारा दीप प्रज्वलन समारोह से हुई। गोवा स्थित इंडिया इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लीगल एजुकेशन एंड रिसर्च के कुलपति प्रो डॉ आर वेंकट राव ने मुख्य भाषण दियाए जिसमें उन्होंने उच्च और निम्न शिक्षा के बीच भेदभाव किए बिना सीखने की निरंतर प्रकृति और शिक्षण प्रक्रियाओं के उन्नयन पर जोर दिया।

ज्ञानवर्धक सत्रों की शुरुआत डॉ प्रोण् विजय कुमार सिंह, अधिष्ठाता स्कूल ऑफ लॉ एसआरएम सोनीपतए हरियाणा द्वारा पाठ्यक्रम डिजाइन और पाठ्यक्रम वितरण पर ब्लूम टैक्सोनॉमी के कार्यान्वयन पर चर्चा के साथ हुई। डॉण् मनीष यादव एसोसिएट प्रोफेसरए नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी भोपाल ने केस लॉ पद्धति की प्रभावशीलता पर एक सत्र का नेतृत्व किया।

अभियान चलाकर निगम क्षेत्र में आवारा मवेशियों को सड़को से पकड़कर गौठान भेजा

रायपुर। उच्च न्यायालय के आदेश के परिपालन में राज्य शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के दिशा निर्देश अनुरूप रायपुर जिला कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह के आदेशानुसार एवं रायपुर नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा के निर्देशानुसार नगर निगम के सभी जोनो द्वारा सड़क मार्गों में काउकेचर एवं विशेष टीम के श्रमवीरो की सहायता से आवारा मवेशियों की धरपकड़ करने अभियान सतत निरंतर जारी है। अभियान के तहत आज जोन 1 की टीम द्वारा 12, जोन 3 की टीम ने मार्गो से 1 आवारा मवेषी की धरपकड़ कर गौठान में छोडा। जबकि जोन 4 ने 7 और जोन 5 ने 6 आवारा मवेशियों की धरपकड़ की। जोन 6 की टीम ने 17 आवारा मवेशियों की धरपकड़ की। जोन 7 ने 7, जोन 8 ने 8, जोन 9 ने 16 आवारा मवेशियों की धरपकड़ की। जोन 10 से 1 आवारा मवेषी की धरपकड़ काउकेचर वाहन एवं विशेष टीम की श्रमवीरों की सहयोग से करते हुए उन्हें गौठान छोड़ा। आज अभियान के तहत जोनों की काऊकैचर टीमों ने कुल 75 आवारा मवेशियों की धरपकड़ की आवारा मवेशियों की धरपकड़ का अभियान सतत निरंतर जारी रहेगा।

नांदणी की पावन धरा पर 1 जनवरी 2025 की सुबह एक नया इतिहास लेकर उदित होगी

नांदणी (विश्व परिवार)। नांदणी की पावन धरा पर 1 जनवरी 2025 की सुबह एक नया इतिहास लेकर उदित होगी। यहां प्रात: से ही इंद्र-इंद्राणियां स्वर्ग के देवताओं की वेशभूषा में सुंदर सज-धजकर नजर आएंगे।

पंचकल्याणक को लेकर हर किसी के मन में सवाल उठते होंगे कि आखिर ये क्या है। इसका धार्मिक महत्व क्या है? तीर्थंकरों के जीवन में घटित पांच घटनाओं का चित्रण पंचकल्याणक में होता है। गर्भ में आने से लेकर मोक्ष तक की यात्रा पंचकल्याणक के माध्यम से देखने को मिलता है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा उत्सव जैनियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक है। तीर्थंकरों की पत्थर और धातु की मूर्तियों को केवल मूर्ति के रूप में लाया जाता है, जब प्रतिष्ठा हो जाती हैं , तब तीर्थंकर भगवान की प्रत्येक मूर्ति पूजनीय बन जाती है। फिर इन मूर्तियों की पूजा इस तरह की जाती है जैसे कि तीर्थंकर भगवान वास्तव में मौजूद हों और प्रतिदिन पवित्र धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं।

जैन धर्म में पंचकल्याणक में वे पाँच मुख्य घटनाएँ हैं,जो सभी तीर्थंकरों के जीवन में घटित होती हैं। ये पाँच कल्याणक हैंङ्क

गर्भ कल्याणक - जब तीर्थंकर प्रभु की आत्मा माता के गर्भ में आती है।

जन्म कल्याणक - जब तीर्थंकर बालक का जन्म होता है।

दीक्षा कल्याणक - जब भगवन सब कुछ त्यागकर वन में जाकर मुनि दीक्षा ग्रहण करते है।

केवल ज्ञान कल्याणक - जब प्रभू को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है।

मोक्ष कल्याणक - जब भगवान शरीर का त्यागकर अर्थात सभी अष्ट कर्म नष्ट करके मोक्ष को प्राप्त करते है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की परम्परा यह बहुत प्राचीन परम्परा है। यह परम्परा अविरत रूप से चली आ रही है। आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का महोत्सव है पंचकल्याणक। धर्म संस्कार जनमानस तक पहुंचाने का माध्यम है पंचकल्याणक महोत्सव।

बुधवार 14 अगस्त 2024 को दोपहर 1 बजे श्री वृषभाचल अतिशय क्षेत्र नांदणी में 2025 साल

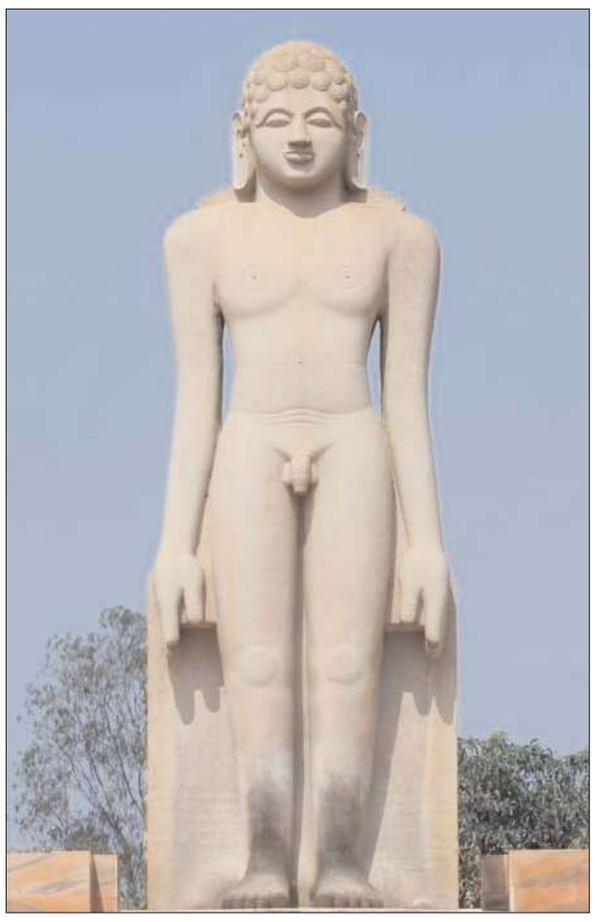

में होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के यजमान पद सवाल का कार्यक्रम होगा द्य

जिसमें सौधर्म इंद्र ङ्क इंद्राणी, तीर्थंकर माता- पिता,ईशान्य इंद्र ङ्क इंद्राणी,धनपती कुबेर, सुवर्ण सौभाग्यवती, महायज्ञनायक, द्वादश इंद्र, मंडप उद्?घाटन, ध्वजारोहण (मंदिर के सामने), अखंड दीप प्रज्वलन, मंगल कलश स्थापना, लोकांतिक देव, पंचकुमार देव, ध्वजारोहण (मंडप के सामने), अष्टकुमारिका, प्रथम दिन के हाथी और घोड़े का सवाल आदी विविध सवाल संपन्न होंगे द्य

नांदणी में निर्मित वृषभाचल जैन तीर्थ पर 1 जनवरी से 9 जनवरी तक आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में और स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी नांदणी के अधिनेतृत्व में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और महा मस्तकाभिषेक की तैयारियों के संबंध में महोत्सव समिति की एक बैठक वृषभाचल पर सभागृह में आयोजित की गई।

स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी नांदणी के अधिनेतृत्व में बैठक को चातुर्मास कमिटी महाराष्ट्र विभाग के अध्यक्ष रावसाहेब जी पाटील (सांगली), कर्नाटक विभाग के अध्यक्ष डॉ अप्पासाहेब जी नाडगोंडा ने संबोधित किया। प्रारंभ में स्वागत भाषण अप्पासाहेब जी भगाटे नांदणी द्वारा किया गया । बैठक में डॉ अजित जी पाटील (सांगली), महावीर गाट (कोल्हापूर),अरविंद जी मजलेकर (चिपरी), भरत जी गाट (हुपरी), अरुण यलगुद्री (अथणी), अजित भंडे (मालगाव), सुभाष मगदूम (शिरटी), सागर संभूशेटे (नांदणी), स्वप्निल देसाई (कोल्हापूर), चंद्रकांत धुळासावंत (नांदणी), अमोल पाटील (हेरले)और अभिषेक पाटील (कोल्हापूर) उपस्थित थे द्य कर्नाटक, महाराष्ट्र प्रांत से अथणी,बोरगांव, उगार, बेलगांव, कोल्हापूर, सांगली, जयसिंगपूर आदि स्थानों से आए अनेक वरिष्ठजन उपस्थित थे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 01 अगस्त 2024

संक्षिप्त समाचार

चोरी करने वाला तथा चोरी का सामान छुपाने वाला गिरफ्तार

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले की लालबाग थाना पुलिस ने पिछले दिनों ग्राम रामपुर में हुई चोरी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है साथ ही चोरी का सामान छिपाने में मदद करने वाले उसके साथी को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के पास से चोरी का सामान बरामद कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार ग्राम रामपुर निवासी व्यक्ति ने लालबाग थाने में रिपोर्ट दर्ज कराया था कि दिनाक 5 जून की रात्रि 12 बजे से 12:30 बजे के मध्य एक अज्ञात व्यक्ति ने उसके घर से कमरे में रखा कम्प्यूटर सेट पुराना इस्तेमाली एवं इसकी लडकी की अंक सूची कक्षा 01 से कॉलेज तक एवं बैंक पास बुक, एटीएम कार्ड, पुराना कपडा तथा नगदी रकम को चोरी कर लिया है। रिपोर्ट पर थाना लालबाग में अज्ञात चोर के खिलाफ धारा 331 (4), 305 (ए), 3(5) बी.एन.एस. पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। मामले में वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में थाना प्रभारी लालबाग निरीक्षक नवरतन प्रसाद कश्यप के नेतृत्व में टीम गठित कर लगातार माल मुल्जिम का पता तलाश किया जा रहा था। इसी दौरन 29 जुलाई को मुखबीर की सूचना पर संदेही ओमकार ठाकुर उर्फ भूरू को पकड़कर पूछताछ करने पर आरोपी द्वारा जुर्म स्वीकार कर चोरी के सामान को छुपाने में अपने साथी छत्रपाल विश्वकर्मा उर्फ सोनू की मदद लेना बताया। जिसपर दोनो संदेहियों के बयान पर मुख्य आरोपी ओमकार उर्फ भूरू के कब्जे से सैमसंग कंपनी का मॉनिटर की बोर्ड, पॉवर केबल, होम थियेटर कनेक्टर एवं प्रार्थी के पुत्री का शिक्षण संबंधी मूल प्रमाण-पत्र तथा सह आरोपी छत्रपाल उर्फ सोनू के कब्जे से कम्प्यूटर सी.पी.यू. यू.पी. एस यू, होम थियेटर, पाँवर अडाप्टर एवं महिला संबंधी पुराने इस्तेमाली कपड़ो को जप्त किया गया तथा मामले में धारा 3 (5) बीएनएस जोड़ी गई। तथा आरोपी छत्रपाल विश्वकर्मा उर्फ सोनू पिता बृजभान विश्वकर्मा उर्फ तरूण उम्र 23 वर्ष तथा ओमकार ठाकुर उर्फ भुरू पिता आत्माराम ठाकुर उम्र 27 वर्ष दोनों निवासी ग्राम रामपुर थाना लालबाग जिला राजनांदगांव को विधिवत् गिरफ्तार कर ज्यूडिशियल रिमाण्ड पर भेजा गया।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने किया विभिन्न प्रतिष्ठानों की जांच

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। कोण्डागांव जिले में खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री डी के देवांगन के द्वारा विभिन्न खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया व खाद्य सामाग्रियों के नमूने लेकर जांच की गई। निरीक्षण के दौरान किराना, होटल, ढाबा, डेयरी. डेलीनीड्स, पान दुकान आदि प्रतिष्ठानों से दूध, पनीर, दही, चटनी, मसाला, तेल, नमकीन, बिस्कुट, बेसन, मैदा, आटा, चाय पत्ती, नमक, मिठाई, जलेबी, पान मसाला, कोल्ड ड्रिंक्स आदि विभिन्न प्रकार के खाद्य सामाग्रियों के नमूने लेकर चलित खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला के माध्यम से मौके पर जांच की गई। निरीक्षण के दौरान इलियास किराना स्टोर्स, कोण्डागांव में खाद्य सामाग्रियों के रख रखाव में अव्यवस्था और साफ सफाई में कमी पाई गई जिसके संबंध में संचालक से जवाब मांगा गया है। झा हाइवे होटल, कोण्डागांव में बहुत ही गंदगी और अस्वच्छ वातावरण में खाद्य सामाग्रियों को रखना और रसोई संचालन करते पाया गया, जिस पर उन्हें नोटिस जारी कर खाद्य अनुज्ञप्ति निलंबन की चेतावनी दी गई है। लक्ष्मी प्राविजन स्टोर्स, कोण्डागांव में एक्सपायरी खाद्य सामाग्रियां- छोले मसाले, पानीपुरी मसाला, ब्रिटेनिया बिस्कुट, जिमजैम बिस्कुट, राजश्री चाय पाई गई जिसे मौके पर नष्ट कराकर संचालक को नोटिस भेजा गया है। पंकज किराना स्टोर्स, फरसगांव से भारी मात्रा में एक्सपायरी हो चुके मसाले 4 किलो, चायपत्ती 1.5 किलो. सोन पापड़ी 8 किलो, बिस्कुट 14 पैकेट, जलजीरा 10 पैकेट आदि पाया गया जिसे मौके पर ही नष्ट करने की कार्यवाही की गई। इसी तरह कैफे वन एण्ड ओनली, बोरगांव, केशकाल से एक्सपायरी हो चुके सॉस 2 बॉटल, विनेगर 3 बॉटल, मॉकटेल कश 4 बॉटल, स्टिंग एनर्जी 14 बॉटल, पेप्सी 6 बॉटल, मिरिन्डा 4 बॉटल नष्ट कराया गया और उन्हें नोटिस भेजकर जवाब मांगा गया है। निरीक्षण के दौरान दिलदार ढाबा बहीगांव में खाद्य अनुज्ञप्ति नहीं पाया गया जिस पर उनके विरूद्ध बिना खाद्य अनुज्ञप्ति खाद्य कारोबार करने का प्रकरण बनाया गया।

जवानों ने बरामद कर डिफ्यूज किया 10 किलो का आईईडी

बीजापुर(विश्व परिवार)। बीजापुर में एक बार फिर जवानों ने नक्सलियों के मनसूबों पर पानी फेर दिया। दरअसल, जवानों ने 10 किलो का आईईडी बरामद किया। नक्सलियों ने आईईडी कमांड स्वीच सिस्टम के जरिए प्लांट किया था। जवानों ने अपनी सूझ-बूझ से इसे डिफ्यूज किया। मिली जानकारी के अनुसार, कुटरू-बेदरे मार्ग पर अम्बेली नाला के पास नक्सलियों ने सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने के लिए 10 किलोग्राम का आईईडी प्लांट कर रखा था। डीमाईनिंग के दौरान थाना कुटरू, डीआरजी और बीजपुर की टीम ने आईईडी बरामद कर लिया। इसके बाद बीडीएस बीजापुर की टीम ने इसे निष्क्रिय किया।

स्कूली बच्चों का स्वास्थ्य जांच करवाना करें सुनिश्चित: कलेक्टर

कलेक्टर मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक ली

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि चिरायु योजना के तहत स्कूली बच्चों का स्वास्थ्य जांच करवाना सुनिश्चित करेंगे। स्क्रीनिंग कार्य के लिए सभी विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी स्वास्थ्य विभाग के जांच टीम को समन्वय स्थापित कर आवश्यक सहयोग करेंगे। उन्होंने शालाओं में पोषण वाटिका विकसित करने सहित शैक्षणिक सत्र 2024-25 में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं हेतु जाति प्रमाण पत्र जारी करने के कार्य को प्राथमिकता देने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश भी दिए। कलेक्टर मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक ली। बैठक में समय-सीमा के प्रकरणों, जनदर्शन, जन शिकायत, पीजी पोर्टल के प्रकरणों में संबंधित विभाग को आवश्यक कार्यवाही कर निराकृत करने के निर्देश दिए। बैठक में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनांतर्गत आधार सिंडिग एवं लैण्ड सिंडिग, किसान क्रिडिट कार्ड, आयल पॉम की प्रगति, एनआरएलएम बैंक लिकेंज, तेंदूपत्ता संग्राहकों को बैंक सखी के माध्यम से भुगतान करवाने, एसएचजी समूह के सदस्यों को बीमा की राशि दिलवाने, पीएम आदि आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत साप्ताहिक प्रगति की जनपदवार समीक्षा किए। इसके अलावा आधार बेस पेमेंट सिस्टम में आधार सिंडिंग, आधार आथेंटिकेशन, मनरेगा के तहत आंगनबाड़ी भवनों के निर्माण की भौतिक प्रगति-हैण्ड ओवर की स्थिति, अपूर्ण विकास कार्यो का वित्तीय वर्ष के आधार पर समीक्षा किया गया। बंद योजनाओं के विकास कार्यो को सीसी लगाकर निराकरण करने के निर्देश दिए। निरस्त कार्यो के राशि को वापस करवाने के निर्देश दिए। वहीं सीएसआर, विशेष केन्द्रीय सहायता योजना, बस्तर क्षेत्र आदिवासी विकास प्राधिकरण अन्तर्गत स्वीकृत कार्यों और हितग्राही मूलक कार्य की प्रगति, सांसद निधि-विधायक निधि से स्वीकृत कार्यो की प्रगति की समीक्षा की गई। साथ ही उचित मूल्य दुकानों में खाद्यान्न सामाग्रियों की भौतिक सत्यापन, पीडीएस बारदाना संग्रहण, विकासखण्डवार भण्डारण की जानकारी ली। कलेक्टर ने शिक्षा विभाग के उल्लास पोर्टल में विद्यार्थियों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों का विकासखण्डवार एन्ट्री की स्थिति की समीक्षा की, साथ ही शाला त्यागी अप्रवेशी छात्रों की स्थिति में आकांक्षी ब्लॉक तोकापाल में सर्वे के आधार पर शाला त्यागी बच्चों को विशेष फोकस करने की आवश्यकता बताई।

किशोरों में भी नशे की लत पर अंकुश लगाना बेहद आवश्यक : कलेक्टर नीलेश कुमार

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर नीलेश कुमार महादेव क्षीरसागर ने आज बैठक लेकर जिले में नशे के विरूद्ध अभियानपूर्वक कार्यवाही करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि कम उम्र के किशोरों में भी नशे की लत होती जा रही है, जिस पर अंकुश लगाना बेहद आवश्यक है। कलेक्टर ने बिना चिकित्सकीय सलाह के नशे की दवा अवैध रूप से बेचने वाले मेडिकल स्टोर्स के संचालकों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए। साथ ही खाद्य व औषधि प्रशासन विभाग के उप संचालक और निरीक्षक को जिले में स्थित सभी 330 मेडिकल स्टोर्स में सतत् दबिश देकर इसकी जांच करने तथा बिना चिकित्सक पर्ची के नशे के तौर पर उपयोग की जाने वाली दवाएं विक्रय करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए उनका नियमानुसार अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) निरस्त करने के लिए निर्देशित किया। बैठक में उप संचालक समाज कल्याण ने बताया कि केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के निर्देशानुसार नशा मुक्ति अभियान जिले में चलाया जा रहा है, जिसके तहत् समाज कल्याण विभाग के अधीन भारत माता वाहिनी का गठन किया गया है। उक्त वाहिनी द्वारा स्कूलों, कॉलेजों, आश्रम-छात्रावासों सहित विभिन्न संस्थानों में विभिन्न गतिविधियां आयोजित कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। नशा मुक्त भारत अभियान के उद्देश्य की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि अब एक हजार से अधिक जनसंख्या वाली ग्राम पंचायतों में भारत माता वाहिनी का गठन किया जाना है, जिसके तहत् विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएगी। इसके लिए कल्याणी नामक गैर शासकीय संगठन द्वारा नशा मुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मनीषा ठाकुर ने बताया कि जिले में कम उम्र के किशोरों में नशे का व्यसन बढ़ता जा रहा है, चूंकि ये अवयस्क होते हैं, ऐसे में उनके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही नहीं की जा सकती। उन्होंने ऐसे किशोरों एवं उनके माता-पिता की काउंसिलिंग कराए जाने पर जोर दिया। इस पर कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग में पदस्थ मनोरोग चिकित्सक सहित विशेषज्ञों की टीम गठित कर काउंसिलिंग कराने के निर्देश दिए। बैठक में डीएफओ हेमचंद पहारे एवं डी.पी. साहू, अपर कलेक्टर एस.अहिरवार, जितेन्द्र कुर्रे, जिला पंचायत सीईओ सुमित अग्रवाल सहित सभी अनुभाग के राजस्व अनुविभागीय अधिकारी और विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

राहत व आपदा के प्रकरणों को तत्काल करें निराकृत : कलेक्टर विजय दयाराम

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि आरबीसी 6-4 के तहत राहत एवं आपदा से संबंधित प्रकरणों में संवेदनशील होकर तत्काल निराकृत करें ताकि प्रभावित व्यक्तियों को समय पर सहायता सुलभ हो सके। कलेक्टर मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में राजस्व अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक ली। उन्होंने अनुभाग क्षेत्र अन्तर्गत संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों की साफ-सफाई, रेडी टू-ईट, पोषण आहार, स्कूल पूर्व शिक्षा हेतु अध्ययन सामग्रीयों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। साथ ही वन अधिकार मान्यता पत्र में फौती नामांतरण के कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने जिले के सभी राजस्व न्यायालय में सेटअप (मानव संसाधन) का भी आंकलन कर आवश्यक जानकारी बनाने के निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने भू-अर्जन के लंबित प्रकरण, अविवादित नामांतरण, विवादित नामांतरण अविवादित खाता, विवादित खाता, भूमि-बंटन, पुर्वस्थापन, द्वारा 165 का उल्लंघन, राजस्व कार्यालय के निर्माण की प्रगति, नक्शा बांटाकन, मसाहती, आरक्षित वन भूमि का सर्वे, अभिलेख कोष्ठ में न्यायालय प्रकरणों की जमा की स्थिति, सीमांकन का न्यायलयवार समीक्षा की। साथ ही न्यायालयों में दर्ज राजस्व प्रकरण, आरबीसी 6-4 के प्रकरण, पुराने प्रकरण को तत्काल निराकरण करने के निर्देश दिए। व्यक्तिगत वनाधिकार के डिजिटाइजेशन की प्रगति की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने वन विभाग के अधिकारियों, पटवारी, ग्राम सचिव से अद्यतन स्थिति की जानकारी लेकर डाटा अपडेट करने के निर्देश दिए। इसके अलावा बैठक में नए पंचायत, राजस्व गांव के गठन के संबंध में भी चर्चा किया।

राजस्व प्रकरणों का समय-सीमा में करें निराकरण : कलेक्टर

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर हरिस.एस ने कहा कि राजस्व संबंधी मामले आम नागरिकों के हितों से सीधा जुड़ा है। इसलिए राजस्व प्रकरणों का निर्धारित समयावधि में उचित निराकरण किया जाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सभी राजस्व विभाग के सभी अधिकारी-कर्मचारियों को राजस्व प्रकरणों का निराकरण हेतु तत्परता के साथ कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जिससे कि निर्धारित समय-सीमा में राजस्व प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित की जा सके। साथ ही समय सीमा से बाहर के प्रकरणों को दस दिवस के भीतर में निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने ग्राम वेरमामोड़ से पालामढ़गू की दूरी लगभग 35 किमी है, वहां के ग्रामीणों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का शीघ्र लाभ दिलाने नजदीकी पंचायत में जोड़ने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश अधिकारियों को दिए। कलेक्टर द्वारा मंगलवार को कलेक्टोरेट कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित समय-सीमा की बैठक में शासन की योजनाओं सहित विभागीय कार्यों की विस्तार से समीक्षा की गई। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत नम्रता जैन, अपर कलेक्टर गजेन्द्र सिंह ठाकुर, संयुक्त कलेक्टर सूरज कश्यप एसडीएम सहित जिला स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

भूमिहार ब्राह्मण समाज ने मदर टेरेसा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित सूफी संत कवि लेखक डॉक्टर जोहर का किया सम्मान

अखिल भारतीय भोजपुरी समाज के वरिष्ठ संस्थापक डॉक्टर जौहर सफियाबादी सूफी संत कवि लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता को मदर टेरेसा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित होने पर ब्रह्मऋषि भूमिहार ब्राह्मण समाज के सदस्यों ने उनके निवास स्थान पर उनको अंगवस्त्र के साथ पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया और बधाई दी। डॉ जौहर शाफियाबादी पिछले कई वर्षों से भोजपुरी समाज में अपना योगदान देते चले आ रहे हैं।

डॉ जौहर की बहुत सारी कविताओं को लेकर पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें उर्दू हिंदी और साहित्य का समावेश है। भूमिहार ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ सदस्य सुधीर राय ने कहा डॉक्टर जोहर हमारे हमारे युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत है जिनके पास अतः ज्ञान का भंडार है। उपस्थित भूमिहार समाज के सदस्य ओमप्रकाश राय, सुधीर राय,सचिव शेषनाथ तिवारी, अनिल सिंह, मीडिया प्रभारी डीके शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे।

कलेक्टर कुणाल दुदावत ने समय-सीमा बैठक में की विकास कार्यों की समीक्षा

आवेदनों के निराकरण ढिलाई दिखाने पर सीएसईबी के ईई को नोटिस

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कुणाल दुदावत ने मंगलवार को आयोजित समय-सीमा बैठक में जिले में संचालित विकास कार्यों की समीक्षा की। जिला कार्यालय के प्रथम तल स्थित सभाकक्ष में आयोजित समय-सीमा बैठक में उन्होंने मुख्यमंत्री जनदर्शन, कलेक्टर जनदर्शन, जनशिकायत पोर्टल, मावा कोंडानार, ग्रामीण सचिवालय तथा जनससमया निवारण शिविरों में प्राप्त आवेदनों की आवेदनवार समीक्षा की। उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी द्वारा आवेदनों के निराकरण में रुचि नहीं दिखाए जाने पर विभाग के कार्यपालन अभियंता को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने इस दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण हेतु भू-अर्जन के प्रकरणों में राषि का भुगतान शीघ्रता से करने के निर्देष दिए। उन्होंने इस दौरान स्वास्थ्य विभाग, आदिवासी विकास विभाग, जल जीवन मिशन सहित विभिन्न योजनाओं के तहत निर्माण कार्यों की समीक्षा की और कार्यों को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देष दिए। उन्होंने बड़े डोंगर में स्वास्थ्य केन्द्र के निर्माण हेतु निविदा की प्रक्रिया पूर्ण करते हुए कार्यादेश जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने पूर्ण कार्यों को हस्तांरण की कार्यवाही भी शीघ्रता से सुनिष्चित करने के निर्देष दिए। उन्होंने जल जीवन मिशन के तहत निर्धारित जलस्त्रोंतो के निकट जल संरक्षण हेतु अधोसंरचना निर्माण के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने इसके साथ ही आयुष्मान कार्ड और किसान क्रेडिट कार्ड बनाने के कार्य में गति लाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने वन अधिकार पट्टों के नामांतरण, बंटवारा आदि प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कार्य में गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्कूलों के माध्यम से जाति प्रमाण पत्र हेतु प्रेषित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कार्य में गति लाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने ई-श्रमिक कार्ड धारी सभी हितग्राहियों को राशन कार्ड उपलब्ध कराने हेतु हितग्राहियों की पहचान सुनिष्चित करने के निर्देष दिए। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से सभी बच्चों को गर्म भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के संबंध में भी निर्देशित किया। उन्होंने इस दौरान राजस्व प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की और सभी प्रकरणों का निराकरण निर्धारित समय-सीमा के भीतर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में केशकाल वन मंडलाधिकारी एन गुरुनाथन, कोंडागांव वन मंडलाधिकारी श्री आरके जांगड़े, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अविनाश भोई, अपर कलेक्टर श्री चित्रकांत चाली ठाकुर सहित जिलास्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर गुरूवार 01 अगस्त 2024

व्यापार समाचार

OPPO ने केवल 12,999 रुपये में मिलिटरी ग्रेड ड्यूरेबिलिटी के साथ OPPO K12x 5G पेश किया

नईदिल्ली। OPPO इंडिया ने केवल 12,999 रुपये में K12x 5G पेश किया है। यह अपने सेगमेंट का सबसे मजबूत 5G स्मार्टफोन है। यह डिवाईस दो आकर्षक रंगों, ब्रीज़ ब्लू और मिडनाईट वॉयलेट में उपलब्ध है, और 2 अगस्त 2024 से OPPO ई-स्टोर एवं फ्लिपकार्ट पर मिलना शुरू होगी। यह सबसे ज्यादा ड्यूरेबिलिटी के लिए 'MIL-STD-810H' मिलिटरी ग्रेड सर्टिफिक्रेशन, IP54 डस्ट एवं वॉटर रज़िस्टैंस रेटिंग और सेगमेंट की सर्वश्रेष्ठ स्प्लैश टच टेक्नोलॉजी के साथ आता है, इसलिए यूज़र्स इसकी टच स्क्रीन को गीली उंगलियों से भी ऑपरेट कर सकते हैं।

सैमसंग गैलेक्सी Z फोल्ड6, Z फ्लिप6, वॉच अल्ट्रा, वॉच7 और बड्स3 की बिक्री पर मिल रहे हैं आकर्षक ऑफर्स

गुरुग्राम: सैमसंग के छठी जनरेशन के फोल्डेबल स्मार्टफोन के साथ ही दूसरे प्रॉडक्ट्स गैलेक्सी Z फोल्ड6, गैलेक्सी Zफ्लिप6, गैलेक्सी वॉच अल्ट्रा, वॉच7 और बड्स3 अब आपके नजदीकी रिटेल आउटलेट्स पर उपलब्ध हैं। उपभोक्ता Samsung.com, Amazon.in और फ्लिपकार्ट पर भी इनकी खरीदारी कर सकते हैं। पिछली जनरेशन के फोल्डेबल की तुलना में पहले 24 घंटों में 40% अधिक प्री-ऑर्डर हासिल कर गैलेक्सी Z फोल्ड6 और गैलेक्सी Zफ्लिप6 रिकॉर्ड बना चुके हैं। गैलेक्सी Z फोल्ड6 और Zफ्लिप6 अब तक के सबसे पतले और हल्के गैलेक्सी Z सीरीज डिवाइस हैं, और सीधे एज के साथ बिल्कुल सिमिट्रीकल डिजाइन के साथ आते हैं। गैलेक्सी Z सीरीज बेहतर आर्मर एल्युमीनियम और कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास विक्टस 2 के साथ आते हैं, जो इसे अब तक की सबसे टिकाऊ गैलेक्सी Z सीरीज बनाती है। गैलेक्सी Zफोल्ड6 और Z फ्लिप6 गैलेक्सी के लिए स्नैपड्रैगन 8 जेन 3 मोबाइल प्लेटफॉर्म से लैस हैं, जो अब तक का सबसे एडवांस्ड स्नैपड्रैगन मोबाइल प्रोसेसर और श्रेणी में सबसे बेहतरीन सीपीयू, जीपीयू और एनपीयू परफॉर्मेंस को साथ लेकर आता है।

फिजिक्स वाला ने PW NSAT 2024 के माध्यम से JEE/NEET उम्मीदवारों के लिए 250 करोड की स्कॉलरशिप की घोषणा की

बिलासपुर। फिजिक्स वाला, भारत की अग्रणी शिक्षा कंपनी, NSAT (राष्ट्रीय स्कॉलरशिप सामान्य प्रवेश परीक्षा) 2024 के तीसरे संस्करण के शुभारंभ के साथ शिक्षा की पहुंच को महत्वपूर्ण रूप से बदलने जा रही है। PW NSAT सबसे बड़ा स्कॉलरशिप परीक्षा है। इस पहल का उद्देश्य NEET-UG और IIT-JEE परीक्षाओं में स्कॉलरशिप हासिल करने की इच्छा रखने वाले छात्रों को श्रेष्ठ शिक्षा और विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान करना है, भले ही उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो। NSAT 2024 के लिए रजिस्ट्रेशन अब खुल गया है, जिसमें देशभर के छात्रों को इन प्रतिष्ठित परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने का मौका दिया गया है। परीक्षा 1 से 15 अक्टूबर तक ऑनलाइन और 6 और 13 अक्टूबर को ऑफ्लाइन - 2024 में चयनित केंद्रों पर आयोजित की जाएगी। ऑनलाइन और ऑफ्लाइन दोनों विकल्प उपलब्ध हैं, जो सभी छात्रों के लिए सुलभ हैं। यह कार्यक्रम कक्षा VI से XII तक के छात्रों के लिए खुला है, जिसमें PCM/PCB समूह शामिल हैं, जिससे यह व्यापक रूप से समावेशी है। महत्वपूर्ण रूप से, परीक्षा रजिस्ट्रेशन निशुल्क है। परिणाम नवंबर 2024 में घोषित किए जाएंगे। इन परीक्षाओं में स्कॉलरशिप हासिल करने वाले शीर्ष 1000 छात्रों को 100% स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी, जिसमें आवास भी शामिल है। इनमें से, शीर्ष 500 आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। इससे सुनिश्चित होता है कि वित्तीय सीमाएं उनकी शैक्षिक स्कॉलरशिप के मार्ग में बाधा न डालें, उन्हें सुरक्षा और राहत प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र एक विशेष रैंकर्स ग्रुप में शामिल हो सकते हैं, जो उन्हें NEET-UG और IIT-JEE जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं में शीर्ष रैंकिंग सुरक्षित करने की संभावनाएं काफी बढ़ाता है। स्कॉलरशिप पहल, जिसकी कुल राशि 250 करोड़ है, छात्रों को उपलब्ध कराई जाएगी।

रियलमी ने 23,999 रुपये में रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी का अनावरण किया

नई दिल्ली: भारतीय युवाओं के सबसे लोकप्रिय स्मार्टफ़ोन ब्रांड, रियलमी ने आज अपने स्मार्टफ़ोन और एआईओटी पोर्टफ़ोलियो में लंबे इंतजार के बाद सबसे आधुनिक उत्पाद - रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी, रियलमी वॉच एस2 और रियलमी बड्स टी310 पेश किए। रियलमी 13 प्रो सीरीज़ 5जी में दो मॉडल, रियलमी 13 प्रो 5जी और रियलमी 13 प्रो 5जी शामिल हैं। इसमें एआई के साथ अल्ट्रा क्लियर कैमरा है, जो इंप्रेशनिज़्म के महान मास्टर, क्लॉड मोनेट से प्रेरित आकर्षक डिज़ाईन के साथ अत्याधुनिक कैमरा टेक्नोलॉजी पेश करता है। रियलमी ने मिड से हाई एंड स्मार्टफ़ोन बाजार में प्रमुख दिग्गज बनने की अपनी योजना के बारे में बताया था। यह महत्वाकांक्षा तीन मुख्य क्षेत्रों: विशाल मैमोरी पॉपुलराईज़ेशन, क्वालिटी अपग्रेड, और हमारे एआईयूआई पॉपुलाईज़र प्लान से स्पष्ट है। युवा यूज़र्स को गहराई से समझने वाले टेक ब्रांड के रूप में रियलमी का वादा है कि भविष्य की हर नंबर प्रो सीरीज़ में स्टैंडर्ड 512जीबी का मैमोरी विकल्प मिलेगा, ताकि आबादी की बढ़ती मांगें पूरी हो सकें। अपने उत्पादों की ड्यूरेबिलिटी बढ़ाने के लिए रियलमी के नंबर प्रो सीरीज़ के फ़ोन कम से कम आईपी65 वॉटर एवं डस्ट रज़िटेंस के साथ आएंगे।

कृष्णा पूनिया ने मनु भाकर को दी बधाई कहा-कई बच्चे अच्छा खेल रहे हैं

नईदिल्ली(एजेंसी)। भारत की स्टार शूटर मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत का नाम रोशन कर दिया। ओलंपिक में मेडल जीतने वाली पहली महिला निशानेबाज बन गईं। उनकी इस उपलब्धि पर भारत का राष्ट्रमंडल खेलों में प्रतिनिधित्व कर चुकीं एथलीट कृष्णा पूनिया ने प्रतिक्रिया दी। राजस्थान खेल परिषद की अध्यक्ष और पद्म पुरस्कार से सम्मानित कृष्णा पूनिया ने मनु भाकर को शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि मैं मनु और देशवासियों को बधाई देती हूं। शूटिंग में उन्होंने हमारे देश के लिए मेडल जीता । मुझे भारतीय दल से और भी आशाएं हैं। खासकर रेसलिंग एथलेटिक्स से हमें दो मेडल की आशा है। नीरज और बाकी दो एथलेटिक्स से उम्मीद है। उन्होंने कहा कि पीवी सिंधु भी बहुत अच्छा कर रही है। शूटिंग में भी और कई बच्चे भी हैं जो बहुत अच्छा खेल रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि इस बार ओलंपिक में भारत के लिए ज्यादा मेडल आएंगे। इस दौरान कृष्णा पूनिया ने खेल बजट को लेकर भी अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि यह बजट निराशाजनक रहा है। ऐसा कुछ खास मुझे स्पोर्ट्स के बजट में नहीं लगा है। अशोक गहलोत सरकार की पूर्व की योजनाएं भी पूरी हो जाए तो बड़ी बात है। खेलों के लिए जो कोच की भर्ती निकाली गई थी उसे जल्द भरना चाहिए। जो भी काम अधूरे हैं उन्हें पूरा करना चाहिए। कृष्णा पूनिया ने राजस्थान में कांग्रेस सरकार की ग्रामीण एवं शहरी ओलंपिक योजना को बंद किए जाने पर भी अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि यह एक छोटी सोच का उदाहरण है। इन योजनाओं का उद्देश्य खेल में प्रतिभागियों की संख्या को बढ़ाना था। जब खेलों में भागीदारी ज्यादा बढ़ेगी तभी प्रतिभा सामने आ पाएगी। पेरिस में हमारे बच्चे खेल रहे हैं तो उनसे मेडल की उम्मीद जताई जा रही है। लेकिन धरातल पर खेलों में भागीदारी नहीं बढ़ेगी तो फिर मेडल की संख्या कैसे बढ़ेगी ?

टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा ने ओलंपिक में रचा इतिहास, आज तक नहीं कर सका कोई ऐसा

पेरिस(एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक 2024 में भारतीय पैडलर मनिका बत्रा ने टेबल टेनिस में राउंड ऑफ 16 में जगह बनाकर इतिहास रच दिया है. मनिका ओलंपिक इतिहास में इस मुकाम तक पहुंचने वाली भारत की पहली टेबल टेनिस प्लेयर बन गई हैं. जी हां, मनिका से पहले आज तक कोई भी टेबल टेनिस प्लेयर राउंड ऑफ 16 तक नहीं पहुच सका है. ऐसे में मनिका ने अपना नाम इतिहास में सुनहरे अक्षरों से दर्ज करा दिया है. अब बस हर भारतीय अपनी इस स्टार से यही उम्मीद कर रहा है कि वह इसी तरह शानदार प्रदर्शन के साथ आगे बढ़ें और मेडल लेकर घर वापसी करें... मनिका बत्रा का सामना राउंड

ऑफ 32 में फ्रेंच पैडलर पृथिका पवाड़ से हुआ. मनिका ने पृथिका को उस मैच में क्लीन स्वीप कर राउंड ऑफ 16 में जगह पक्की की. मैच की बात करें, तो मनिका के लिए शुरुआत कुछ खास नहीं रही थी. पहले गेम में वह 2 अंक से पिछड़ रहीं थीं, लेकिन फिर उन्होंने कमाल की वापसी की और पहला गेम 11-9 से जीता. फिर दूसरे गेम को 11-6, तीसरे गेम को 11-9 और चौथा गेम 11-7 से जीत लिया. इसी के साथ उन्होंने इस मैच में विपक्षी खिलाड़ी पृथिका को क्लीन स्वीप कर दिया. मनिका बत्रा ने अभी मेडल नहीं जीता है और नया रिकॉर्ड बना लिया है. जी हां, ओलंपिक इतिहास में राउंड ऑफ 16 में पहुंचने वाली पहली भारतीय प्लेयर बन गई हैं. आज तक कोई भी भारतीय इस स्तर तक नहीं पहुंच सका. मनिका से पहले ये रिकॉर्ड शतक कमल के नाम दर्ज था. वह टोक्यो ओलंपिक 2020 में मेन्स सिंगल्स में 32 के राउंड तक पहुंचे थे. बताते चलें, पेरिस ओलंपिक 2024 में मनिका बत्रा ने राउंड ऑफ 64 में ग्रेट ब्रिटेन की अन्ना हर्से को हराया था.

मनु भाकर ने रच दिया इतिहास, एक ही ओलंपिक में 2 मेडल जीतने वाली बनीं पहली भारतीय

पेरिस(एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक 2024 के चौथे दिन मनु भाकर और सरबजोत सिंह की जोड़ी ने इतिहास रचते हुए भारत को उसका दूसरा मेडल दिला दिया है. मनु और सरबजोत ने 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट में रिपब्लिक ऑफ कोरिया की जोड़ी को हराकर ब्रॉन्ज मेडल जीत लिया है. मनु ने इससे पहले शूटिंग में ही भारत को पहला मेडल जिताया था. ऐसे में वह भारत के लिए एक ही ओलंपिक में 2 मेडल जीतने वाली पहली महिला एथलीट बन गई हैं. भारतीय निशानेबाज मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में अपना

लोहा मनवा दिया है. वुमन 10 मीटर एयर पिस्टल में ब्रॉन्ज मेडल जीतने के बाद अब उन्होंने मिक्सड डबल्स में भी मेडल जीत लिया है. इसी के साथ मनु ने इतिहास रच दिया. आजादी के बाद वह एक ही ओलंपिक में भारत के लिए 2 मेडल जीतने वाली भारत की पहली एथलीट बन गई हैं. उनसे पहले आज तक कोई भी एथलीट ऐसा नहीं कर सका. मैच की बात करें, तो भारतीय शूटिंग जोड़ी का सामना कोरिया की वोन्हो और ओह ये जिन की जोड़ी से था.मुकाबले में भारतीय जोड़ी ने 16-10 के स्कोर के साथ जीत दर्ज की और भारत को दूसरा मेडल जिताया. पेरिस ओलंपिक में अब तक भारत ने 2 मेडल जीते हैं और दोनों ही मेडल शूटिंग में आए हैं. इससे पहले मनु भाकर ने महिलाओं के 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता था.

अदाणी ग्रीन के लिए खावड़ा प्लांट गेम चेंजर, शेयर में आ सकती है 75 प्रतिशत की तेजी : जेफरीज

नई दिल्ली(एजेंसी)। बिजली की मजबूत मांग और इंडस्ट्री के तेजी से बढ़ने के कारण अदाणी ग्रीन की ओर से आक्रामक तरीके से क्षमता का विस्तार किया जा रहा है। ऐसे में अदाणी ग्रुप की इस रिन्यूएबल कंपनी के शेयर में बुल-केस स्थिति में 75 प्रतिशत की बढ़त देखने को मिल सकती है। जेफरीज की ओर से एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। ग्लोबल ब्रोकरेज फर्म की ओर से कंपनी के शेयर प्राइस का टारगेट 2,130 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है, जो कि इसके पिछले कारोबारी सत्र के अंतिम भाव से 17 प्रतिशत अधिक है। सोमवार कारोबार के सत्र में दोपहर 11:30 बजे तक अदाणी ग्रीन का शेयर 1.5 प्रतिशत की तेजी के साथ 1,830 रुपये पर था। जेफरीज ने संभावना जताई है कि अदाणी ग्रीन

का शेयर मौजूदा भाव से 75 प्रतिशत बढ़कर 3,180 रुपये तक जा सकता है। इसकी वजह कंपनी द्वारा 2030 तक 50 गीगावाट तक क्षमता विस्तार का लक्ष्य रखना है। रिपोर्ट में जेफरीज की ओर से कहा गया कि अदाणी ग्रीन के लिए खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी प्लांट एक गेम-चेंजर साबित होगा। बता दें, खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी प्लांट 538 स्क्वायर किलोमीटर में फैला हुआ है और यह पेरिस शहर के मुकाबले पांच गुना ज्यादा बड़ा है। इस प्लांट की कुल क्षमता 30 गीगावाट की होगी, जिसे 2029 तक विकसित किया जाना है। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के 12 महीने के अंदर कंपनी की ओर से खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी प्लांट में 2 गीगावाट की क्षमता शुरू की जा चुकी है और वित्त वर्ष 25 में कुल 6 गीगावाट की क्षमता जोड़ने की कंपनी ने योजना बनाई गई है। वित्त वर्ष 25 की पहली तिमाही में अदाणी ग्रीन एनर्जी का मुनाफा 95 प्रतिशत बढ़कर 629 करोड़ रुपये हो गया है। ग्लोबल ब्रोकरेज ने अनुमान जताया है कि पावर सेक्टर में होने वाला पूंजीगत व्यय वित्त वर्ष 2024-30 के बीच में 2.2 गुना बढ़कर 280 अरब डॉलर हो सकता है। अदाणी ग्रीन एनर्जी की ओर से पिछले हफ्ते खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी प्लांट में 250 मेगावाट की क्षमता की पहली पवन ऊर्जा प्लांट का संचालन शुरू किया गया था।

डी'डेकोर के कॉन्शस फैब्रिक ब्रांड संसार ने ब्रांड एंबेसडर रणवीर सिंह के साथ नया राष्ट्रीय टीवीसी लॉन्च किया

नईदिल्ली। होम डेकोर फैब्रिक्स में अग्रणी डी'डेकोर ने आज अपने नए ब्रांड संसार के राष्ट्रीय रिटेल लॉन्च की घोषणा की। 50 मेट्रो और गैर-मेट्रो शहरों के 350 स्टोर्स में उपलब्ध, संसार कॉन्शस लिविंग के प्रति समर्पित है और मन से तैयार किए गए होम डेकोर फैब्रिक्स की पेशकश करता है। लॉन्च से पहले, संसार ने एक नया टीवीसी लॉन्च किया, जिसमें ब्रांड एंबेसडर और बॉलीवुड सुपरस्टार, पावरहाउस रणवीर सिंह 'लिव कॉन्शसली' टैगलाइन के साथ दिखाई दे रहे हैं। यह विज्ञापन संसार की माइंडफुल लिविंग के प्रति प्रतिबद्धता के साथ मेल खाता है। यह उन घरों को दर्शाता है जहां हर चुनाव का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। रणवीर सिंह का संसार के साथ जुड़ाव ब्रांड के संदेश को स्पष्ट करता है कि स्टाइल को पर्यावरणीय जागरूकता के साथ सहजता से जोड़ा जा सकता है, जिससे उपभोक्ताओं को अपने रहने के स्थान को जिम्मेदारी से सुधारने का अवसर मिलता है। लॉन्च के बारे में टिप्पणी करते हुए, संसार की बिजनेस हेड, संजना अरोड़ा ने कहा, संसार को अपने प्रीमियम, मिनिमलिस्टिक फैब्रिक्स पर गर्व है जो भारत में तैयार किए गए हैं। ये उत्पाद हमारे व्यापक एक्सक्लूसिव रिटेल आउटलेट्स नेटवर्क के माध्यम से प्रमुख मेट्रो, टियर 1, 2 और 3 शहरों में उपलब्ध होंगे। बॉलीवुड के पावरहाउस रणवीर सिंह की उपस्थिति के साथ इस विस्तार से हमारे ग्राहकों को गहराई से प्रभावित करने वाले उच्च गुणवत्ता वाले होम डेकोर सॉल्यूशंस प्रदान करने पर हमारा ध्यान केंद्रित है।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने प्रस्तावित नए निवेश के लिए महाराष्ट्र के साथ एमओयू पर दस्तखत किए

मुंबई। भारत के लिये अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता की पुनपुष्टि करते हुए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने छत्रपति संभाजी नगर में एक ग्रीन फील्ड निर्माण सुविधा की स्थापना की संभावना का पता लगाने के लिए महाराष्ट्र सरकार के साथ एक एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर हस्ताक्षर किए। कर्नाटक मुख्यालय वाली टीकेएम के पास पहले से ही विश्व स्तरीय विनिर्माण व्यवस्था है। इसमें बिदादी स्थित दो अत्याधुनिक इकाइयां हैं, जो वैश्विक ऑटोमोबाइल परिदृश्य में भारत की स्थिति को योगदान देने और मजबूत करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हैं। महाराष्ट्र सरकार के साथ आज इस एमओयू का आदान-प्रदान डॉ. हर्षदीप कांबले (आईएएस), प्रधान सचिव (उद्योग), महाराष्ट्र सरकार और श्री सुदीप संतराम दलवी, निदेशक और मुख्य संचार अधिकारी, टीकेएम के बीच हुआ। इस मौके पर श्री एकनाथ शिंदे जी, माननीय मुख्यमंत्री, श्री देवेंद्र फ्डणवीस जी, माननीय उपमुख्यमंत्री, श्री अजीत पवार जी, माननीय उपमुख्यमंत्री और अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। टीकेएम की ओर से टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के एमडी और सीईओ तथा टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन (टीएमसी) में क्षेत्रीय सीईओ श्री मस्त्राकाजू पोशिमुरा, टीकेएम की वाइस प्रेसिडेंट सुश्री मानसी टाटा, टीकेएम के उप प्रबंध निदेशक श्री स्वप्नेश आर मारू उपस्थित थे। 1999 में इसके परिचालन की शुरुआत के बाद से, भारत का महत्व बढ़ता जा रहा है और अब यह वैश्विक स्तर पर टोयोटा के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बन गया है। 'ग्रो इंडिया ग्रो विद इंडिया' के मूल मूल्यों के तहत काम करते हुए, कंपनी कौशल संवर्धन, स्थानीयकरण और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के विकास की प्रमुख राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ अपने परिचालन का विस्तार करने के लिए बड़े पैमाने पर काम कर रही है। कंपनी के मजबूत संचालन और महत्वपूर्ण विस्तार का अभिन्न अंग भारत सरकार और कर्नाटक राज्य द्वारा दिया गया अपार समर्थन रहा है। इसने विकास की एक मजबूत नींव रखी है और अब कंपनी को विस्तार के अगले चरण में प्रवेश करने में सक्षम बनाया है। पिछले 25 वर्षों में, टोयोटा ने खुद को नवाचार और विनिर्माण प्रथाओं के लिए एक मॉडल कंपनी के रूप में स्थापित किया है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग, संभाग-महासमुन्द (छ.ग.)
निविदा आमंत्रण सूचना (प्रथम आमंत्रण)

क्रमांक- 3191/एन.आई.टी. क्र.-3/2024-25/व.ले.लि. महासमुन्द दिनांक 25/07/2024

1 निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि :- 08/08/2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
2 ठेकेदारों द्वारा प्रस्तुत निविदायें प्राप्त करने की अंतिम तिथि :- 21/08/2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
3 निविदा खोलने की तिथि :- 22/08/2024 पूर्वान्ह 11.30 बजे तक

एनआईटी क्र. निविदा क्र.	कार्य का विवरण/ No. of Calls	कार्य की अनुमानित लागत (लाख में) अमानत राशि (रू. में) बैंक साल्वेंसी (रू. में)
3 T0007	जिला महासमुन्द के शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय महासमुंद के बालक छात्रावास पॉलीटेक्निक में पेटिंग, मरम्मत एवं शौचालय निर्माण कार्य।	19.28 14500.00 289500.00

टीप :- (1) उपरोक्त निविदा में निविदा प्रपत्र Form-A में तथा निविदा प्रपत्र की कीमत राशि रू. 750/- है।
(2) उपरोक्त निविदा में निविदाकारों की श्रेणी ई-पंजीयन के अंतर्गत "द" से "अ" तक है।
(3) उपरोक्त निविदा में कार्य की अवधि 03 माह निर्धारित है।

निविदा संबंधी शर्तें एवं विशेष शर्तें विभागीय वेबसाईट www.cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत उपलब्ध है। इनका अवलोकन संबंधित संभागीय कार्यालय में किया जा सकता है।

G-242501407/1

कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग (भ./स.)
संभाग - महासमुन्द (छ.ग.)

महतारी
वंदन
योजना
खुशियों का नोटिफिकेशन
महतारी वंदन से मातृशक्ति का सम्मान
माँ को समर्पित है "एक पेड़ माँ के नाम"
1 अगस्त 2024
₹1000 की छठवीं किश्त जारी
प्रदेश की महतारियां
आज करेंगी
पौधरोपण
एक
पेड़
माँ
के
नाम
श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
S - 40993/29
मुख्यमंत्री
श्री विष्णु देव साय
से जुड़ने के लिए
QR CODE स्कैन करें
हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे
विष्णु के सुशासन से
सँवर रहा छत्तीसगढ़
Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in
छत्तीसगढ़ जनसंपर्क